साहित्य–संगीत–कला को समर्पित

शब्दम्

चरण १२: २०१५–१६

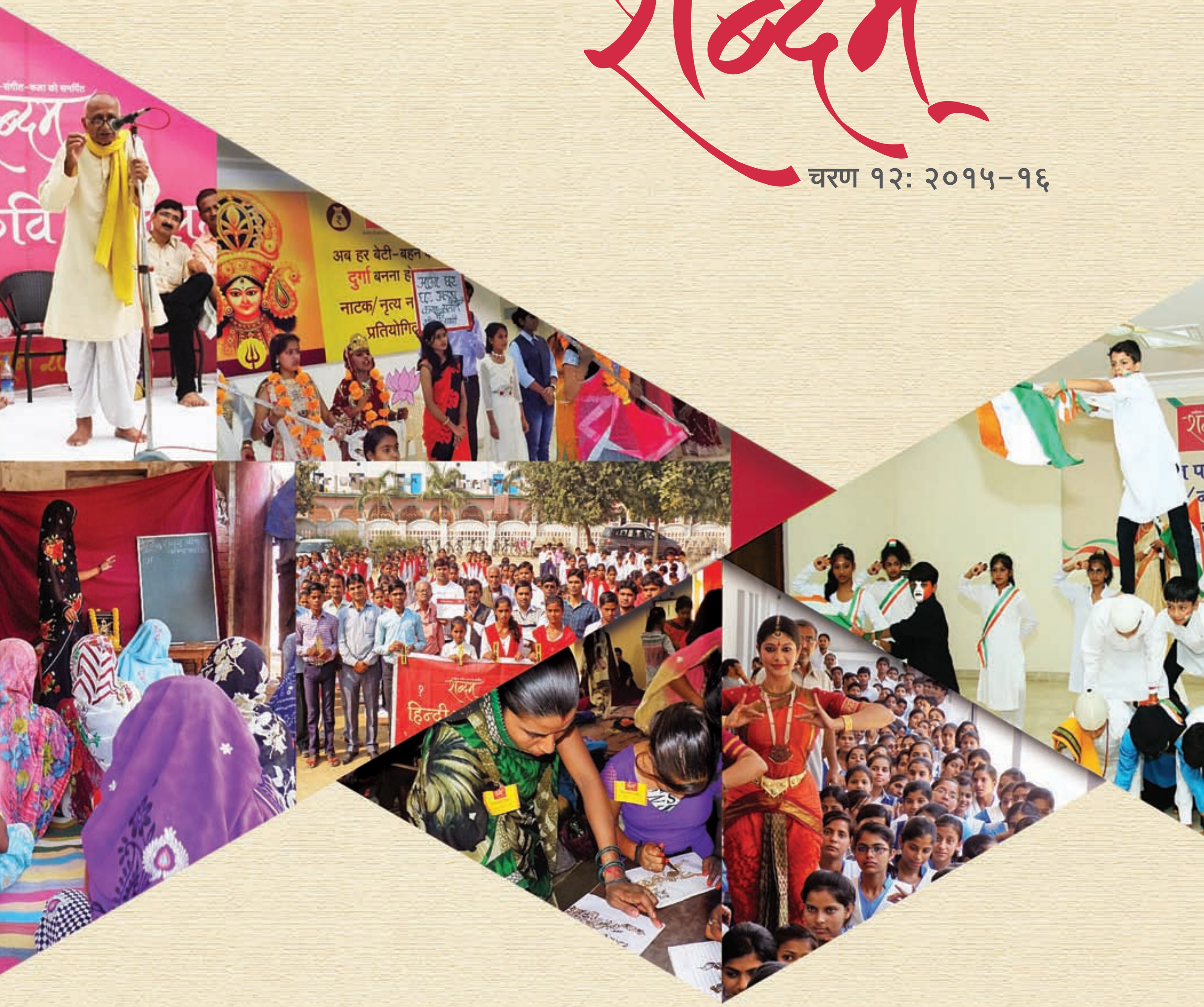

शब्द शक्ति की आराधना के लिए

'शब्दम' ध्वनि, नाद और अर्थ तीनों का सम्मिलित रूप है। इसके व्यापक क्षेत्र के अन्तर्गत विविध साहित्य-संगीत-कला स्वत: ही आ जाते हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर माँ शारदा की कृपा से १७ नवम्बर २००४ को इस संस्था (शब्दम्) का गठन शिकोहाबाद (उ.प्र.) में हुआ।

उद्देश्य

१. हिन्दी साहित्य की विविध विधाओं जैसे कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, निबन्ध आदि की उच्चस्तरीय रचनाओं और नव लेखन को बढ़ावा देना तथा उपलब्ध साहित्य को जन साधारण के सामने प्रस्तुत करना।

२. विविध भारतीय ललित कलाओं, संगीत एवम् साहित्य को प्रोत्साहित करना।

३. देश विदेश में राष्ट्र भाषा हिन्दी के गौरव के लिए प्रयास करना।

४. हिन्दी को शिक्षण और बोलचाल के क्षेत्र में लोकप्रिय बनाना।

५. हिन्दी को रोजी-रोटी प्राप्त करने की भाषा बनाना तथा सब तरह के कारोबार में इसके प्रयोग को बढ़ावा देना।

६. भारत की एकता के लिए हिन्दी की सेवा करना।

सम्पर्क:
शिकोहाबादः दीपक औहरी, मोहित जादोंन
शब्दम्, हिंद लैम्प्स परिसर, शिकोहाबाद – 283141, फोनः (05676)234018
ई–मेलः shabdamhoskb@gmail.com, pmhoskb@gmail.com

साहित्य-संगीत-कला को समर्पित

शब्दम्

चरण १२: २०१५-१६

शब्दम् न्यासी मंडल

अध्यक्ष

श्रीमती किरण बजाज

उपाध्यक्ष

प्रो. नन्दलाल पाठक
(कार्याध्यक्ष, महाराष्ट्र राज्य हिन्दी साहित्य अकादमी)

श्री उदय प्रताप सिंह
(कार्यकारी अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान)

श्री सोम ठाकुर

वरिष्ठ सदस्य

श्री शेखर बजाज

श्री मुकुल उपाध्याय

विशिष्ट सलाहकार

श्री बालकृष्ण गुप्त

श्री उमाशंकर शर्मा

श्री मंज़र-उल वासै

डॉ. अजय कुमार आहूजा

डॉ. ध्रुवेंद्र भदौरिया

डॉ. महेश आलोक

डॉ. रजनी यादव

श्री अरविंद तिवारी

विशिष्ट आमंत्रित सलाहकार

श्रीमती सुदीप्ता व्यास (न्यूज़ीलैण्ड)

साहित्य-संगीत-कला को समर्पित

शब्दम्

अनुक्रम

अध्यक्षीय निवेदन............03

वार्षिक कार्यक्रम

दशम् ग्रामीण कवि सम्मेलन............05
शिक्षक दिवस............11
हिन्दी संस्कृति सप्ताह............16
स्थापना दिवस............18
प्रश्नमंच............20
रामनवमीं नाट्यमंचन............22
गांधी जयन्ती............24

महिला सशक्तिकरण

महिला रोजगारपरक शैक्षणिक कार्यक्रम

शब्दम् 'बालिका–महिला सिलाई केन्द्र'............26
शब्दम् 'बालिका–महिला पाठशाला'............27
दो दिवसीय प्रशिक्षण............29
ग्रीष्मकालीन शिविर............30

महिला सांस्कृतिक कार्यक्रम

'हर बेटी को दुर्गा बनना होगा'
नाटक/नृत्य नाटिका............33
'बहन बचाओ अभियान' विचार गोष्ठी............35
राखी पूर्णिमा आयोजन............38
महिला कवि सम्मेलन............39
जानकीदेवी बजाज जयन्ती समारोह............46

समन्वय/प्रायोजित कार्यक्रम

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत............50
भरतनाट्यम कार्यशाला एवं नृत्य............51
कथक कार्यशाला एवं नृत्य............52
हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत............53
ओडिसी कार्यशाला एवं नृत्य............54
हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत............55
कथक कार्यशाला एवं नृत्य............56

विविधा

राष्ट्रप्रेम पर आधारित नाटक/नृत्य
नाटिका............57
रस महोत्सव............59
पुस्तक चर्चा............61
सम्मान............63

अध्यक्षीय निवेदन

शब्दम् के संदर्भ में मरहूम 'मजरूह' सुल्तानपुरी का लोकप्रिय शेर हमेशा याद आता है:

मैं अकेला ही चला था, जानिब–ए–मंज़िल मगर
लोग साथ आते गये, और कारवाँ बनता गया।

बारह वर्ष पहले साहित्य–संगीत–कला को समर्पित संस्था का विचार आया, प्रो. नन्दलाल पाठक ने उसे नाम और दिशा दी, माननीय उदयप्रताप सिंह एवं अनेक सुधीजनों ने उस विचार को पोषण और प्रोत्साहन दिया और तब शब्दम् संस्था अस्तित्व में आयी। इन बारह वर्षों में शब्दम् संस्था के साथ अनेकानेक व्यक्ति व संस्थाएं जुड़ती गईं और यात्रा जारी रही। साथ ही दिशा निर्धारण और उसकी पुष्टि भी होती गई।

इस क्रम में मैं कुछ कार्यक्रमों का ज़िक्र करना चाहूँगी जो शब्दम् की मूल भावना के प्रतीक हैं। एक है – ग्रामीण कवि सम्मेलन।

मत रोकिये मुझको यहाँ अब काव्य के इस मंच पर,
है ज़िक्र मेरे गाँव का, बस चल गया तो चल गया।

गाँव की मिट्टी में साहित्य का रस बरसाने वाले इस कार्यक्रम की लोकप्रियता वर्ष–दर–वर्ष बढ़ती जा रही है। श्रोताओं की बढ़ती संख्या तथा विषयों की विविधता इसके प्रमाण हैं। माननीय उदयप्रतापजी की सतत उपस्थिति एवं मार्गदर्शन लाखन सिंह एवं अन्य अनेक कवियों का काव्यपाठ एवं डॉ. ध्रुवेन्द्र भदौरिया का योग्य कवियों का चयन और संचालन ग्रामीण कवि सम्मेलन की गरिमा बढ़ाता रहा है।

हिंदी प्रसार की कड़ी में शब्दम् के 'प्रश्नमंच' कार्यक्रम की माँग स्कूलों–कॉलेजों में निरंतर बढ़ रही है। श्री मंज़र–उल वासै ने जिस शिद्दत से इसे सँवारा है उसे रेखांकित करना आवश्यक है। शब्दम् उनका आभारी है।

हमन हैं इश्क मस्ताना, हमन को होशियारी क्या?
रहे आजाद या जग से, हमन दुनिया से यारी क्या?

जो बिछुड़े हैं पियारे से, भटकते दर–ब–दर फिरते,
हमारा यार है हम में, हमन को इंतज़ारी क्या?

कबीर एवं सूफ़ी कवि भारतीय संस्कृति, समाज, साहित्य और सोच के प्रतीक हैं। उनके दर्शन को सतत, लोगों तक पहुँचाना, वह भी विभिन्न माध्यमों के द्वारा एक महत् कार्य है। शब्दम् को प्रसन्नता है कि हम मुंबई में 'कबीर उत्सव' में सहभागी होकर कृतार्थ हो रहे हैं।

साथ ही स्पिकमैके की चर्चा करना भी आवश्यक है। भारतीय शास्त्रीय व लोक संगीत, नाटक, कला, नृत्य तथा संस्कृति के अन्य पक्षों के प्रचार–प्रसार के लिए शब्दम् ने स्पिकमैके से सक्रिय सहभागिता की है। विशेषकर युवा वर्ग में इस प्रयास का अच्छा स्वागत हुआ है। हम स्पिकमैके तथा सभी कलाकारों के अनुगृहीत हैं।

हाल में व्हाट्सएप पर एक संदेश बहुत ही माकूल है– ''नन्हीं–नन्हीं बच्चियों को चार किताबें पढ़ने दो साहब! कोख से बच आई हैं, दहेज़ से भी बच जायेंगी।''

शब्दम् ग्रामीण बालिका पाठशाला एवं सिलाई केन्द्र शिक्षण और रोजगार परक ग्रीष्मकालीन शिविर सरल हिन्दी में सिखाना शब्दम् की पहचान बन चुके हैं।

साहित्य–संगीत–कला के प्रति समर्पित शब्दम् के मूल उद्देश्यों की पूर्ति के लिए स्थायी, प्रायोजित तथा विविध कार्यक्रमों के आयोजन व सफल संचालन के लिए जो लोग सतत प्रयत्नशील हैं उनके नाम यदि लिये जाएं तो एक अलग अध्याय ही लिखना होगा, लेकिन मैं विशेष तौर पर शब्दम् संस्था सहयोगी दीपक ओहरी, कैलाश चौधरी, अभिषेक श्रीवास्तव एवं मोहित जादोंन का उल्लेख अवश्य करना चाहूँगी। साथ ही कहना चाहूँगी कि यदि शेखर बजाज, मुकुल उपाध्याय, सलाहकार मंडल के सदस्यों, प्रतिभागी कलाकारों, विद्यार्थियों, शिक्षकों और पाठकों का सहयोग, मार्गदर्शन और प्रोत्साहन न होता तो शब्दम् की यह राह यहाँ तक न पहुँच पाती।

सफ़र जारी है.......

करण बजाज

"

जो समाज करुणा और कला से जुड़ा उसमें असीम शक्ति का संचार होता है। कला का कोई भी स्वरूप - चाहे वह संगीत हो, या साहित्य, या लोक कला, या चित्र कला हो-इन सब में समाज को ऊँचाई तक ले जाने की क्षमता है।

-मार्टिन ओ' माले

"

साहित्य-संगीत-कला को समर्पित शब्दम्

वार्षिक कार्यक्रम

दशम् ग्रामीण कवि सम्मेलन

- **कार्यक्रम विषय** : दशम् ग्रामीण कवि सम्मेलन
- **दिनांक** : 19 जून 2016
- **अध्यक्षता** : श्री उदयप्रताप सिंह
- **आमंत्रित कविगण** : श्री आलोक 'बेजान' श्री भगवान मकरन्द
- **स्थान** : बटेश्वर मार्ग पर स्थित, ग्राम सुजावलपुर

संयोजन : शब्दम्

माटी को देखो नहीं, घृणा की आँखों से, माटी की महिमा समझो, हृदय उदार करो।।

माटी से कीमत है, माटी की मूरत की, ओ माटी के पुतलो, माटी से प्यार करो।

कवि लाखन सिंह भदौरिया ने जब माटी के ऊपर अपनी उपर्युक्त कविता पढ़ी तो 'किसानों' के चेहरे से माटी की ख़ुशबू का अनुभव किया जा सकता था। शब्दम् का दशम् ग्रामीण कवि सम्मेलन, बटेश्वर मार्ग पर स्थित ग्राम सुजावलपुर में आयोजित किया गया। कवि सम्मेलन में समसामयिक रचनाओं की हवा चली।

प्रो. नन्दलाल पाठक ने अपने संदेश में कहा "गाँवों में जैसे मलेरिया उन्मूलन, पोलियो उन्मूलन के अभियान चलते रहते हैं, वैसे ही काव्य रस सेवन का अभियान भी चलते रहना चाहिए। कविता हमारे आन्तरिक पर्यावरण को स्वस्थ वातावरण प्रदान करती है। स्वस्थ वातावरण ही, वह बाहर का हो या भीतर का, हमें जीवन शक्ति प्रदान करता है।

संस्था अध्यक्ष किरण बजाज द्वारा भेजे गए संदेश में कहा गया कि कविता की खेती से ग्रामीण मन समृद्ध होगा। सच तो यह है कि ग्रामीण जीवन स्वभावतः काव्यात्मक होता है।

काव्यपाठ करते कवि लाखन सिंह भदौरिया।

काव्यपाठ करते कवि डॉ. ध्रुवेन्द्र भदौरिया।

काव्यपाठ करते कवि आलोक 'बेजान'।

पेड़, पौधे, नदी, नाले, पशुपक्षी गाँव के वातावरण में प्रचुरता से छाए रहते है। ''प्रकृति स्वयं ईश्वर की सर्वोत्तम कविता है।''

कवि आलोक 'बेजान' ने आज की राजनैतिक स्थिति को अपनी कविता के माध्यम से कुछ इस तरह दर्शाया ''होते रोज अजूबे देखे, हमने इस संसार में

सूरज माथा टेक रहा है जुगनू के दरबार में। दुनिया की इस मण्डी में खोटे सिक्के चल जाते हैं

जनम–जनम के अंधे, आखों वालों को छल जाते हैं''।

कवि भगवान सिंह मकरन्द ने भ्रूण हत्या के विरुद्ध अपनी कविता की प्रस्तुति देते हुए कहा कि ''कोख में मत मारौ, मैं बेटी भारत मैया की। मैं तो जी लूंगी खाय–खायकें झूठन भैया की''।

कवि सम्मेलन की अध्यक्षता कर रहे उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष उदय प्रताप सिंह ने कहा कि ''सुन्दर विचारों को समाज में बोने का कार्य कविता करती है, जिससे हम सब प्रेम से रह सकें।'' उन्होंने अपने काव्यपाठ में कहा कि ''एक वक्त की रोटी पाते आधे हिन्दुस्तानी लोग

दौलत का बेशर्म प्रदर्शन करते हैं अभिमानी लोग; लागत से कम दाम पर करते खेती और किसानी लोग, इसे भाग्य का खेल बताकर करते है, शैतानी लोग''।

शब्दम् सलाहकार एवं वरिष्ठ कवि डॉ. ध्रुवेन्द्र भदौरिया ने कार्यक्रम का हमेशा की तरह सार्थक संचालन किया। उन्होंने राम जटायु प्रसंग के माध्यम से आज के रावणों को बड़ा कड़ा संदेश दिया और निम्न पंक्तियों के

काव्यपाठ करते कवि भगवान 'मकरन्द'।

माध्यम से ऐसे रावणों के दुर्गति की कामना की:

''लाल–लाल लहु का भरा नदीष चाहिए,
जिन बाहुओं ने वैदेही का हरण किया बल से,
भोज में भुजाएँ वही पूरी बीस चाहिए और
जिन नयनों ने निहारा है सिया को कुदृष्टि से
वह बीस नयन नोचने को दस शीश चाहिए।''

ग्राम समिति के हाकिम सिंह, रघुवीर सिंह, प्रधान भँवर सिंह, वीरेश्वर, रवी एवं दीपू ने अध्यक्षता कर रहे उदय प्रताप सिंह एवं आमंत्रित कवियों का शॉल एवं हरित कलश से स्वागत किया। कार्यक्रम में उमाशंकर शर्मा, मंजर–उल वासै, हरीशंकर यादव एवं क्षेत्र के गण्यमान्य लोग उपस्थित रहे।

इसीके साथ शब्दम्–पर्यावरण मित्र द्वारा चलाए जा रहे 'जिन्दगी चुनो, तम्बाकू नहीं'' अभियान के अंतर्गत तम्बाकू छोड़ चुके 14

अध्यक्षीय वक्तव्य एवं काव्यपाठ करते उदयप्रताप सिंह।

लोगों को हरित कलश देकर, जन समूह के सामने सम्मानित किया गया।

ग्रामीण कवि सम्मेलन में ग्राम सुजावलपुर तथा आस–पास के गांव के लगभग 1 हजार से अधिक श्रोतागण एक टकटकी के साथ कवि सम्मेलन को सुनते रहे। महिलाएं यहाँ अपनी परम्परावादी वेशभूषा विशेषतौर पर घूँघट डालकर काव्यरस का आनंद लेती रहीं।

समूह छायांकन।

ग्रामीण कवि सम्मेलन का एक दृश्य।

वहीं कुछ बुजुर्ग अपने जूतों के ऊपर बैठकर, सबकुछ भूलकर, कविता में खोते हुए नजर आए। बुजुर्ग रामलाल के अनुसार वे 68 साल के हो गए हैं, और इससे पहले उन्होंने कवि सम्मेलन नहीं देखा है।

शब्दम् टीम जब कार्यक्रम का प्रचार–प्रसार कर रही थी, तब भी कई महिला पुरुष यह पूछते हुए नजर आए कि भइया यह कवि सम्मेलन क्या होता है, इसमें कुछ खाने–पीने को भी मिलेगा, क्या यह कोई मेला है? इन प्रश्नों से यह प्रश्न उठते हैं कि कविता ने जिन भारतीय गाँवों से अपनी यात्रा शुरू की थी, और बड़े–बड़े कवि भी दिए थे, आज वही कविता गाँवों से इतनी दूर कैसे चली गई। कवि सम्मेलन देखना तो अलग बात है, ग्रामीण लोगों ने अभी तक कवि सम्मेलन का नाम भी नहीं सुना है। क्या बड़े–बड़े वातानुकूलित हॉल में चंद लोगों के बीच मनोरंजन के रूप में कवि सम्मेलन अपनी सार्थकता दिखाता है? यह साहित्यकारों एवं सुधीजनों के लिए शोचनीय और चिन्तनीय प्रश्न है।

क्या आज के साहित्य जगत को एक ऐसा पूल तैयार नहीं करना चाहिए जो निःशुल्क गांव–गांव जाकर कवि सम्मेलन/साहित्यिक गोष्ठियां करे, जिससे ग्रामीण जनों को न सिर्फ स्वस्थ वातावरण मिल सके बल्कि कालजयी भारतीय कविताएं भी पुनर्जीवित हो सकें?

...सूरज माथा टेक रहा है जुगनू के दरबार में

कोख में मत मारो, मैं बेटी भारत मैया की

'जन्म के अंधे, आंख वालों को छल जाते हैं'

कोख में मत मारो, मैं बेटी भारत मैया की'

कोख में मत मारो, मैं बेटी भारत मैया की :कवि

आलोक बेजान

जन्म तिथि– 1 मई 1968 शिक्षा– एम.ए.(समाजशास्त्र)

पता– 25 मदरसा, निकट मामन चौकी, बुलन्दशहर–203001

मोबाइल– 09897391302, 09045848868 ई–मेल – kavialokbejan@gmail.com

प्रकाशित कृति – कविता नहीं कुरुक्षेत्र (संयुक्त संकलन)

सम्मान– साहित्य भूषण (साहित्य भारतीय उन्नाव), काव्य गरिमा (सीमिया इण्टरनेशनल), व्यंग्य भूषण (उद्घोष) काशीराम सम्मान (जिला प्रशासन, एटा) छन्दभारती (संस्कार भारतीय, हापुड़), मीरा साहित्य भूषण (राजस्थान), काव्य गरिमा सम्मान (प्रेरणा भारती समिति), नेशनल प्रेस क्लब ऑफ इण्डिया द्वारा सम्मानित इनके अतिरिक्त अन्य विभिन्न संस्थओं द्वारा सम्मानित।

मुक्तक

यहीं फुटपाथ पर रहते हैं नीचे आसमां के हम,
किसी भी महल की हमको कोई दरकार नहीं है।
जिधर से भी करे तबीयत उधर से ही चले आना,
हमारे घर में कोई छत कोई दीवार नहीं है।

वो धूप में ठिठुर रहा है शाल ओढ़कर
मैं खुश बहुत हूँ हड्डियों पे खाल ओढ़कर
अब कोई भी ख़तरा नहीं है बाज से मुझे,
सोचा था एक चिड़िया ने ये जाल ओढ़कर।

–आलोक बेजान

डॉ. भगवान 'मकरन्द'

शिक्षा– एम0ए0 (हिन्दी,अंग्रेजी), पीएच.डी, बी.एड. हास्य–व्यंग्य कवि विधा–गीत व छन्दों में शिष्ट व विशिष्ट हास्य– व्यंग्य प्रस्तुति काव्य–पाठ–देश विदेश के विभिन्न कवि सम्मेलनों में व टीवी चैनलों पर कविता–पाठ। प्रकाशन–मकरन्द के अलावा विभिन्न पत्र– पत्रिकाओं में शताधिक कविताएँ व् लेख प्रकाशित सम्मान–राजस्थान सरकार द्वारा दिया जाने वाला सर्वोच्च शिक्षक पुरस्कार, राज्य स्तरीय शिक्षक पुरस्कार, ब्रजभाषा विभूषण सम्मान, हास्य–श्री सम्मान सहित दो दर्जन सम्मान। विशेष–अष्टछाप के पदों को ध्रुपद धमार में गायन की पद्धति, हवेली–संगीत के दुर्लभ गायक। सम्प्रति–राजस्थान में शिक्षक पद पर कार्यरत।

पता –गोविन्द मोहल्ला कामां 321022 जिला भरतपुर (राजस्थान) मो– 9828737151

कविता

भ्रूण हत्या के विरुद्ध (अजन्मी कन्या की पुकार)

कोख में मत मारौ मैं बेटी भारत मैया की।
मैं तौ जी लूंगी खाय–खायकें झूठन भैया की।।

बाबुल तेरे अंगना की चिड़िया मैं कछु चुग जाउंगी।
डारैगौ जा संग भंवरिया चुप्पचाप उड़ जाउंगी।
दै दै भीख में सांस कछु या सौन चिरैया की।।
कोख में मत मारौ––

जा खूँटा पै बाँधौगे मैं बाही पै बँध जाउंगी।
सुख में दुख में जैसे राखौ नाँय नैंक रंभाऊंगी।
है अब लाज तिहारे हाथ या घायल गैया की।
कोख में मत मारौ––

गौतम–नारी बनी शिला श्रीराम ने इक दिन तार दई।
सावित्री के प्रन के आगें सारी सृष्टि हार गई।
है सौगंध तुम्हें द्रोपद की लाज बचैया की।
कोख में मत मारौ–––

–श्री भगवान मकरन्द

कवि परिचय- लाखन सिंह भदौरिया

जन्म– 3 अगस्त 1928
जन्म स्थान– बरौली पार जिला इटावा उ0प्र0
शिक्षा– एम.ए. (हिन्दी संस्कृत) साहित्य रत्न, साहित्यालंकार
लेखन विधाएंः– गीत, मुक्तक, कविता, निबन्ध, संस्मरण आदि।
सम्प्रति– संस्कृत अध्यापक से सेवा निवृत्त

प्रकाशित रचनाएं– आर्य मित्र, आर्य मर्यादा, कल्पना, वीणा, राष्ट्रधर्म, सुकवि विनोद, मानस चन्द्र, मानस संगम, अखण्ड ज्योति, पांचजन्य, सार्वदेशिक, आर्य सेवक आर्य जगत् क्रान्ति स्वर, संकल्प, हितोपदेशक हिन्दुस्तान, जनसत्ता एवं दैनिक जागरण के अतिरिक्त अन्य अनेक पत्रिकाओं तथा दर्जनों काव्य संकलनों में रचनाओं का प्रकाशन।

पता– सौमित्र कुटीर, भोजपुरा, मैनपुरी (उ.प्र.) मोबाइल– 9411060165

कबीर

ओ यती जतन से तुम ही ओढ़ सके अपनी,
निर्दोष जिन्दगी की अनमैली चादर को,
यह सिर्फ तुम्हारे मुख से ही घोषणा सुनी
लो ज्यों की त्यों धर चले, चंदरिया हम घर को।
अटपटे बोल में घोल गए, ऐसे रहस्य,
विद्वानों के बूते लगते हैं अर्थ नहीं,
तुम कैसे अनपढ़ थे, समझा कर चले गए
हम उलटबासियाँ समझ सकें सामर्थ्य नहीं।
तुम ढायी 'आखर' प्रेम पढ़े थे बस केवल,
फिर भी श्रुतियों का सत्य तुम्हारी वाणी में,
तुम कागद देखी बात नहीं बोले तपसी
है आँखों देखा सत्य गिरा कल्याणी में।
तुम लिए लुकाटी घर से बाहर निकल पड़े।
देते जग को आवाज उठाकर हाथ चले,
कबिरा तो खड़ा बाजार, तमाशा देख रहा
जो भी घर बारे अपना मेरे साथ चले।
पर तुमसा फक्कड़, अक्खड़ कोई नहीं मिला,
जो आगे बढ़कर ऐसा शाहनशाह बनें,
चिन्ता की चादर फेंक चाह का मोह त्याग
मनुवाँ इकतारे पर गा, वे परवाह बनें।
फिर भी तुम कितनी पीर सँजोए थे कबीर,
दुर्भाग्य देहरी पर पीड़ा की बाँह मिली,
वैधव्य जननि का दे न सका वात्सल्य तुम्हें
अपमानों के आँचल की तुमको छाँह मिली।
तुम आए तो द्वारे शहनाई बजी नहीं,
तुम रोए तो ममता नहीं, दुलार दिया,
धरती की मजबूरी ने तुम्हें सम्भाला था
माता की मजबूरी ने तुम्हें न प्यार दिया।
माँ की ममता अंसुवा ढुलका कर छोड़ गयी।
तुमको निर्जन में अपनी लाल बचाने को,
हिचकियाँ तम्हारी सुनकर दीन जुलाहे का
वात्सल्य उमड़ ही आया, तुम्हें उठाने को।
तुम ममता से त्यागे, समता की गोद गए।
संकीर्ण मतों की चिट प्राचीर ढहाने को,
जीवन पट तुमने बुना सत्य के करघे पर
सुलझाया तुमने उलझे ताने–बाने को।

शिक्षक सम्मान समारोह

- **कार्यक्रम विषय** : शिक्षक की चुनौतियां
- **दिनांक** : 8 सितम्बर 2016 • **स्थान** : हिन्द परिसर स्थित संस्कृति भवन
- **सम्मानित शिक्षक** : श्री तुलसीदास शर्मा, डॉ. डी.पी.सिंह, श्री अशोक कुमार • **संयोजन** : शब्दम्

शब्दम् द्वारा शिक्षक दिवस के उपलक्ष्य में विशिष्ट शिक्षक सम्मान समारोह एवं 'शिक्षक की चुनौतियां' विषय पर विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया।

'शब्दम्' द्वारा प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी देश को मजबूत करने वाली भावी पीढ़ी के निर्माताओं का सम्मान किया गया। इस शृंखला में तीन शिक्षकों–श्री तुलसीदास शर्मा, डॉ. डी.पी. सिंह (दोनों सेवा निवृत्त प्राचार्य) एवं सरस्वती विद्यामन्दिर के प्रधानाचार्य श्री अशोक कुमार शिकोहाबाद को शॉल, नारियल एवं सम्मान पत्र देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता उमाशंकर शर्मा ने की।

इस अवसर पर शब्दम् अध्यक्ष किरण बजाज के संदेश में कहा गया कि शिक्षकों के योगदान और महत्त्व को स्मरण करने और उनकी गरिमा में वृद्धि करने के लिए शिक्षक दिवस मनाया जाता है। भारतवर्ष में अनेक आदर्श शिक्षक हुए हैं। आधुनिक भारत में डॉ. अब्दुल कलाम की अलग पहचान है। आदर्श शिक्षक ही युग निर्माता हो सकता है।

श्री तुलसीदास शर्मा को सम्मान पत्र भेंट करते सलाहकार समिति के सदस्य।

विचार व्यक्त करते श्री अरविन्द तिवारी।

अपने अनुभवों को व्यक्त करते शिक्षक डॉ. डी. पी. सिंह।

विचार व्यक्त करते डॉ. महेश आलोक।

अपने अनुभवों को व्यक्त करते शिक्षक श्री अशोक कुमार।

शिक्षक का कार्य केवल पाठ्यक्रम की किताबें पढ़ाना नहीं है बल्कि चरित्रज्ञान एवं अर्थज्ञान के माध्यम से विद्यार्थियों को मानसिक तौर पर सशक्त बनाना है।

सम्मानित शिक्षकों की शृंखला में अपना वक्तव्य देते हुए श्री डी.पी. सिंह ने कहा कि प्रत्येक विद्यार्थी के अन्दर कोई न कोई प्रतिभा छुपी हुई होती है, यह शिक्षक का कर्तव्य है कि विद्यार्थी के अन्दर छुपी हुई प्रतिभा को बाहर निकाले और उसे समाज के लिए तैयार करें।

इसी क्रम में अशोक कुमार ने कहा कि शिक्षक, शिक्षण कार्य को पूजा की तरह ग्रहण करें। शिक्षक को सदैव सकारात्मक सोच रखनी चाहिए, वह विद्यार्थियों पर निरन्तर सकारात्मकता से कार्य करे निश्चित रूप से परिवर्तन होगा। हम अपने व्यवहार से प्यार से और ज्ञान से किसी भी छात्र को बदल सकते हैं।

मुम्बई से भेजे अपने संदेश में नन्दलाल पाठक ने कहा कि शिक्षक समाज की देन है। आज का समाज राजनेता और व्यापारी द्वारा शासित है। दोनों मूल्य और आदर्श से दूर हैं। एक को सत्ता चाहिए, दूसरे को लाभ। नैतिकता उपेक्षित है। युवावर्ग को रचनात्मक काम में लगाना ही आज के शिक्षक की सबसे बड़ी चुनौती है। सही शिक्षण कर्मयोग है। शिक्षक को कर्मयोगी होने का सुख प्राप्त करना चाहिए।

दूरभाष से दिए संदेश में उदयप्रताप सिंह ने

कहा कि सोशल मीडिया के आने के बाद शिक्षा का परिदृश्य बिल्कुल बदल गया। सूचना प्रोद्यौगिकी के विस्फोटन, सोशल मीडिया और टी.वी. मोबाइल के चलते नयी पीढ़ी के अबोध बालपन में कुसंस्कारों का जहर घोला जा रहा है। अध्यापक के सामने सबसे बड़ी चुनौती यह है कि इन कुंसस्कारों के प्रभाव को कैसे कम किया जाए और कैसे उन्हें अच्छे संस्कार दिये जाएँ जिससे उनका चरित्र निर्माण हो सके और श्रेष्ठ जीवन मूल्य और आदर्शों की उनके व्यवहार में स्थापना की जा सके।

मुम्बई से अपने संदेश में मुकुल उपाध्याय ने कहा कि शिक्षक की मुख्य चुनौती है अपने और विद्यार्थी के बीच की पीढ़ी के अन्तर को पाटते रहना– सत्र दर सत्र। संचार माध्यमों के सतत विकास के कारण यह अंतर तेजी से बढ़ रहा है और बढ़ता रहेगा।

कार्यक्रम का धन्यवाद ज्ञापन डॉ. रजनी यादव ने दिया। कार्यक्रम में डा. महेश आलोक, मंज़र–उल वासै, अरविन्द तिवारी, डॉ. कान्ता श्रीवास्तव, डॉ. श्रीराम आर्या, डॉ. चन्द्रवीर जैन, डॉ. आर.सी. गुप्ता, संजय शर्मा, प्रवेश यादव एवं शिकोहाबाद, सिरसागंज के विभिन्न विद्यालयों के छात्र एवं अध्यापकगण उपस्थित थे।

समूह छायांकन।

सम्मान पत्र के साथ सम्मानित शिक्षकगण एवं शब्दम् सलाहकार समिति के सदस्य।

साहित्य–संगीत–कला को समर्पित

शब्दम्

वार्षिक कार्यक्रम

शिक्षक सम्मान श्री पोरस मास्टर

- **कार्यक्रम विषय** : दिनांक–16 मार्च 2016, बुधवार
- **दिनांक** : 16 मार्च 2016 ● **स्थान** : हिन्द लैम्प्स परिसर स्थित, कल्पतरू
- **सम्मानित शिक्षक** : श्री पोरस मास्टर

शब्दम् संस्था ने आर्कीटेक्ट श्री पोरस मास्टर का शिक्षक सम्मान दिनांक 16 मार्च 2016 को शिकोहाबाद स्थित चिन्तन भवन में नारियल, सम्मान पत्र एवं वैजयन्ती माला पहनाकर किया।

इस अवसर पर आर्कीटेक्ट श्री पोरस मास्टर ने वास्तु शास्त्र के संदर्भ में बोलते हुए कहा, वास्तुशास्त्र एक प्रचीन वैज्ञानिक विधि है जो हमारे भारतीय समुदाय में काफी प्रचलित है। यह वैज्ञाानिक विधि घर बनाने की योजना, सार्वजनिक भवन और निजी भवन एवं उद्योगों के संयोजन करने हेतु प्रयोग में

लायी जाती है।

प्राचीनकाल में निर्माण कार्य वास्तु आधारित होता था परन्तु धीरे–धीरे लोग इस शास्त्र से दूर होते गए परन्तु आज वास्तु शास्त्र फिर से प्रतिस्थापित हो रहा है। लोग यह सुनिश्चित करना चाहते है कि उनके यहाँ कोई ख़राब

शब्दम् शिक्षक सम्मान पत्र के साथ पोरस मास्टर, शब्दम् अध्यक्ष एवं सलाहकार समिति।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में वास्तुशिल्पी पोरस मास्टर पौधा रोपण करते हुए।

वास्तु सम्बन्धित पूछे गए प्रश्न का उत्तर देते वास्तुशिल्पी पोरस मास्टर।

स्थिति या परेशानी ना आये। कोई भी घर 100 प्रतिशत वास्तु के अनुसार नहीं होता। इस वजह से लोग अपने वास्तु को उन्नत बनाने के लिए अपने परिसर में लाखों रुपया ख़र्च कर देते हैं।

जब कि वास्तविकता यह है कि वास्तु, मनुष्य के जीवन में बहुत कम प्रभाव डालती है।

खगोल विद्या एवं ज्योतिष विद्या कुछ ऐसे प्रकार हैं जो अलग से प्रभाव डालते हैं।

मैंने अपने 33 वर्ष के व्यावसायिक अनुभव से देखा कि ऐसे परिवार हैं जिन्होंने काफ़ी सफलता अर्जित की है, जबकि उनके घर, ऑफिस, फैक्ट्री, निवास आदि में बहुत खराब वास्तु सिद्धान्तों का प्रयोग किया गया था ।

वास्तुविद् होने के नाते इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूँ कि आपका परिसर प्रसन्न, सुन्दर वातावरण में निर्मित हो और उसके अन्दर चुम्बकीय शक्तियों का मिश्रण है तो वास्तु का प्रभाव है, तो वह सकारात्मक और परिवार को खुशी देने वाला होगा। इसलिए इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूँ कि हर एक व्यक्ति को तर्कशील एवं सुन्दर वातावरण ध्यान में रखना चाहिए।

"अगर किसी देश को भ्रष्टाचार - मुक्त और सुन्दर-मन वाले लोगों का देश बनाना है तो, मेरा दृढ़तापूर्वक मानना है कि समाज के तीन प्रमुख सदस्य ये कर सकते हैं. पिता, माता और गुरु।

- अब्दुल कलाम"

साहित्य–संगीत–कला को समर्पित
शब्दम्

वार्षिक कार्यक्रम

छात्र सम्मान समारोह

- **कार्यक्रम** : छात्र सम्मान समारोह
- **दिनांक** : 23 सितम्बर 2016 • **स्थान** : संस्कृति भवन, हिन्द लैम्प्स परिसर स्थित, शिकोहाबाद

शब्दम् ने किया हिन्दी विषय में अधिकतम अंक लाने वाले 75 छात्र–छात्राओं का सम्मान

हिन्दी–दिवस के उपलक्ष्य में शब्दम् ने हिन्दी में अधिकतम अंक लाने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित किया।

इण्टरमीडिएट में 85 प्रतिशत एवं स्नातक–स्नातकोत्तर में 70 प्रतिशत से अधिक अंक लाने वाले विद्यार्थियों को जब सम्मानित किया गया तो उनके साथ आए अध्यापकों का भी सीना गर्व से ऊँचा हो उठा।

'शब्दम्' ने हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में छात्र सम्मान समारोह कार्यक्रम के साथ 'हिन्दी में रोजगार की सम्भावनाएं' विषय पर आयोजित गोष्ठी का आयोजन किया। जिसमें नगर के गण्यमान्य शिक्षकों एवं विद्वज्जनों ने अपने अपने विचार प्रस्तुत किए।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे मंज़र–उल वासै ने कहा कि नेट और सोशल मीडिया के प्रचलन में आने के बाद अब ये बेहद आवश्यक है कि अब इनकी प्रोग्रामिंग हिन्दी में होना प्रारम्भ हो ताकि इस क्षेत्र में असीमित रोजगार के अवसर खुल जाएंगे।

डॉ. महेश आलोक ने कहा कि हिन्दी का

सम्मानित छात्रों के साथ समूह छायांकन।

भविष्य बहुत उज्ज्वल है। जितना रोजगार हिन्दी में है उतना अन्य विषयों में नहीं है। जरूरत है अपने विषय को गहराई से समझने की और जानने की।

अरविन्द तिवारी ने कहा कि हिन्दी विषय पढ़ने वालों के लिए रोजगार की असीम सम्भावनाएं हैं। शिक्षा विभाग में सबसे ज्यादा पद हिन्दी शिक्षक के हैं। इसके अलावा मीडिया में भी सबसे ज्यादा रोजगार हिन्दी पढ़ने वालों के लिए उपलब्ध हैं। प्रिंट मीडिया के बाद इलेक्ट्रोनिक मीडिया में भी हिन्दी विशेषज्ञों की विशेष मांग है। मल्टीनेशनल कम्पनियां जो भारत में कार्य कर रही हैं उनमें भी हिन्दी के जानकार लोगों को लिए सम्भावनाएं हैं।

लखनऊ से भेजे अपने वॉइस एसएमएस में उदयप्रताप सिंह, कार्यकारी अध्यक्ष–उ.प्र. हिन्दी संस्थान ने कहा कि कोई भी भाषा जब तक रोजगार से नहीं जुड़ेगी तब तक उस भाषा का विकास नहीं हो सकता। लोग भाषा को मातृ भाषा के रूप में पढ़ तो सकते हैं पर जब वह भाषा रोजगार से जुड़ जाती है तो उस भाषा में वे प्रवीणता प्राप्त करने का प्रयास करते हैं, जिससे रोजगार में उनका भविष्य उज्ज्वल हो।

कार्यक्रम में डॉ. डी.पी. सिंह, डॉ. टी.एन. यादव, नारायण सिंह, डॉ. चन्द्रवीर जैन, लक्ष्मीनारायण यादव इत्यादि उपस्थित रहे।

हिंदी में अधिक अंक लाने वाले विद्यार्थी सम्मानित

हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में शब्दम संस्था ने किया आयोजन

अमर उजाला ब्यूरो

शिकोहाबाद।

शब्दम ने किया हिन्दी विषय में अधिकतम अंक लाने वाले 75 छात्र-छात्राओं का सम्मान

शब्दम् ने किया हिन्द विषय में अधिकतम अंक लाने वाले 75 छात्र-छात्राओं का सम्मान

शिकोहाबाद। हिन्दी के दिवस के उपलक्ष्य में शब्दम् ने हिन्दी विषय में अधिकतम अंक लाने वाले विद्यार्थियों का सम्मान किया। इण्टरमीडिएट में 85 प्रतिशत एवं स्नातक-स्नातकोत्तर में 70 प्रतिशत से अधिक अंक लाने वाले विद्यार्थियों को जब सम्मानित किया गया तो उनके साथ आए विद्यालय के अध्यापकों का भी गर्व से सीना ऊँचा हो उठा।

शब्दम् ने हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में छात्र सम्मान समारोह कार्यक्रम के साथ 'हिन्दी में रोजगार की सम्भावनाएं' विषय पर आयोजित गोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें नगर के गणमान्य शिक्षकों एवं विद्वानों ने अपने अपने विचार प्रस्तुत किए। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे मंजर उल वासै ने कहा कि नेट और सोशल मीडिया के प्रचलन में आने के बाद अब ये बेहद आवश्यक है कि अब इनकी प्रोग्रामिंग हिन्दी में होना प्रारम्भ हो तो इस क्षेत्र में असीमित रोजगार के अवसर खुल जाएंगे। डॉ.महेश आलोक ने कहा कि हिन्दी का भविष्य बहुत उज्जवल है जितना रोजगार हिन्दी में उतना अन्य विषयों में नहीं है। जरूरत है अपने विषय को गहराई से समझने की और जानने की। अरविन्द तिवारी ने कहा कि हिन्दी विषय पढ़ने वालों के लिए रोजगार की असीम सम्भावनाएं है। शिक्षा विभाग में सबसे ज्यादा पद हिन्दी शिक्षक के हैं। इसके अलावा मीडिया में भी सबसे ज्यादा रोजगार हिन्दी पढ़ने वालों के लिए उपलब्ध हैं।

लखनऊ से भेजे अपने वॉइस एसएमएस में उदयप्रताप सिंह अध्यक्ष उ.प्र. हिन्दी संस्थान ने कहा कि कोई भी भाषा जब तक रोजगार से नहीं जुड़ेगी तब तक उस भाषा का विकास नहीं हो सकता। लोग भाषा को मातृ भाषा के रूप में पढ़ तो सकते है। कार्यक्रम का संचालन एवं धन्यवाद दीपक ओहरी ने किया। कार्यक्रम में डॉ.डीपी सिंह, डॉ.टीएन. यादव, नारायण सिंह, लक्ष्मीनारायण यादव इत्यादि उपस्थित रहे।

सम्मानित छात्र–छात्राओं के साथ सलाहकार समिति।

बारहवें स्थापना दिवस पर विभिन्न कार्यक्रम

- **कार्यक्रम विषय :** बारहवें स्थापना दिवस पर विभिन्न कार्यक्रम
- **दिनांक :** 12 नवम्बर से 25 नवम्बर
- **स्थान :** संस्कृति भवन, हिन्दलैम्प्स परिसर, शिकोहाबाद
- **हिन्दी सेवी सम्मान :** श्री उदयप्रताप सिंह

बारहवें स्थापना दिवस के अवसर पर संस्था ने व्यापक रूप देते हुए 12 नवम्बर से 25 नवम्बर 2016 तक निम्न गतिविधियां आयोजित कीं:

स्थापना दिवस प्रश्नमंच कार्यक्रम – 7 विद्यालयों में स्थापना दिवस प्रश्नमचं कार्यक्रम आयोजित किया गया।

12 नवम्बर – आचार्य पी.एस.के.के.जे.एच. स्कूल

14 नवम्बर – प्रशांत मैमोरियल हा.से. स्कूल

15 नवम्बर – आदर्श कृष्ण स्मारक इण्टर कॉलेज

16 नवम्बर – श्रीमती महादेवी जगत सिंह इण्टर कॉलेज

17 नवम्बर – सरस्वती ज्ञान मन्दिर

18 नवम्बर – शीलगंगा स्मारक इण्टर कॉलेज मॉंड़ई

19 नवम्बर – श्रीमती शान्ति देवी लज्जाराम इण्टर कॉलेज

स्थापना दिवस के अवसर पर प्रश्नमंच कार्यक्रम में प्रश्न पूछते मंजर–उल वासै।

स्थापना दिवस स्पिक मैके कार्यक्रम

21 नवम्बर – श्रीमती शान्ति देवी लज्जाराम इण्टर कॉलेज माड़ई एवं डिवाइन इंटरनेशनल ऐकडमी, सिरसागंज

22 नवम्बर – सेण्ट रामास एकेडमी, स्वामी नगर एवं सरस्वती विद्या मन्दिर, जसलई रोड

23 नवम्बर – चौ. अमर सिंह मार्ग श्री इंटर कॉलेज एवं श्री मेघसिंह हुण्ड़ीलाल इण्टर कॉलेज

24 नवम्बर – स्वामी विवेकानन्द विद्यापीठ, आदर्श कृष्ण स्मारक इण्टर कॉलेज एवं हिन्द परिसर स्थित संस्कृति भवन

25 नवम्बर – पं. ज्ञान सिंह क्षेत्रीय किसान इण्टर कॉलेज एवं बीरवल सिंह दुलारी देवी इंटर कॉलेज

स्थापना दिवस 'नोट बंदी' बैंकों पर जल, फल वितरण कार्यक्रम

15 नवम्बर से 19 नवम्बर तक शिकोहाबाद स्थित बैंक ऑफ बडौदा, एस.बी.आई, पी. एन.बी, एचडीएफसी, आईसीआईसीआई, एक्सिस, ऑरियन्टल बैक ऑफ कॉमर्स, सिंडीकेट बैंक, बैक ऑफ इण्डिया आदि बैंको पर लाइन में खड़े व्यक्तियों के बीच जल–फल वितरण किया।

'धैर्य रखिए, हमारा देश अब बदल रहा है...'

शब्दम के स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में चला हिन्दी प्रश्नमंच

सामाजिक संस्थाओं ने

शिकोहाबाद (ब्यूरो)। किरण बजाज के ... शब्दम संस्था ने मंगलवार को लाइन में ल... इस दौरान कतार में सुबह से खड़े लोगों ... वितरण किया गया। अभियान का प्रारंभ बैं... इसके बाद स्टेट बैंक, एचडीएफसी बैंक, ... पंजाब बैंक पर भी अभियान चलाया गया। ... दिनों में भी जारी रहेगा। अभियान के स... मनोज, उत्तम आदि

देश परिवर्तन के लिए बैंकों की लाइन में लगे लोगों को स्वल्पाहार कराते संस्था कर्मी।

हिन्दी प्रश्नमंच

इस वर्ष शब्दम् टीम ने यह निर्णय लिया कि जो विद्यालय अभी तक प्रश्नमंच कार्यक्रम से वंचित रहे हैं, उन्हीं विद्यालयों में प्रश्नमंच कार्यक्रम कराया जाए। इसके अंतर्गत इस बार दूरदराज के ग्रामीण अंचल के विद्यालयों को प्रश्नमंच कार्यक्रम के लिए चुना गया। धूल उड़ाती मिट्टी के बीच जब गाँव के छात्रों का प्रश्नों से सामना हुआ तो कई बार वे विचलित भी हुए, कई बार उत्साहित दिखे, कुछ जबाब सही थे, कुछ गलत थे पर इन सब के बीच शब्दम् के प्रश्नमंच कार्यक्रम का उद्देश्य कि उन छात्रों के मन में हिन्दी के प्रति गौरव पैदा करना, पूर्ण होता दिखा।

प्रश्नमंच कार्यक्रम के उद्देश्य

- छात्र छात्राओं के मध्य हिन्दी व हिन्दी साहित्य के प्रति सम्मान, जिज्ञासा, उत्साह एवं रुचि पैदा करना।
- विद्यालय, महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय स्तर पर हिन्दी के ज्ञान को बढ़ावा देना।
- हिन्दी का प्रसार करना।

शब्दम् द्वारा अभी तक लगभग 200 विद्यालय–महाविद्यालयों के 87 हजार छात्र–छात्राओं के मध्य प्रश्नमंच कार्यक्रम आयोजित किया जा चुका है।

विजयी छात्र–छात्राओं के साथ समूह छायांकन।

वर्ष 2015–16 में भाग लेने वाले महाविद्यालय / विद्यालय

स्वामी विवेकानन्द मैमोरियल, बलीपुर
पालीवाल पब्लिक स्कूल, शिकोहाबाद
ब्लूमिंग बड्स पब्लिक स्कूल, शिकोहाबाद
जी.डी.एम इण्टर कॉलेज, बिजकौली
दाऊदयाल गर्ल्स इण्टर कॉलेज, फिरोजाबाद
डी0आर0 इण्टर कॉलेज, माधौगंज
एस.आर.एस. मैमोरियल स्कूल, एन.एच.2 शिकोहाबाद
चौ0 लालसिंह इण्टर कॉलेज, खटुआमई
श्रीमती अतरप्यारी देवी इण्टर कॉलेज, दतावली
राजकीय इण्टर कॉलेज, नसीरपुर
ए.एस.के.इण्टर कॉलेज, दतावली
जोर्जियस एकेडमी, शिकोहाबाद
ब्राइट स्कॉलर्स एकेडमी, सिरसागंज
कार्टन्स पब्लिक स्कूल, शिकोहाबाद
चन्द्रवती मटरूमल सरस्वती वि.म., शिकोहाबाद
मु. अब्दुल करीम एकेडमी, शिकोहाबाद
आचार्य पी.एस.के.के.जे.एच., बाखलपुर
प्रशांत मैमोरियल हा.से स्कूल, शिकोहाबाद
आदर्श कृष्ण स्मारक इण्टर कॉलेज, अरॉंव
श्रीमती महादेवी जगत सिंह इण्टर कॉलेज, लाछपुर, शिकोहाबाद
सरस्वती ज्ञान मन्दिर, शिकोहाबाद
शीलगंगा स्मारक इण्टर कॉलेज, मॉंडई
श्रीमती शान्तिदेवी लज्जाराम इं., मॉंडई
इण्डियन इण्टर कॉलेज, न. बांध
श्री गयाप्रसाद मैमोरियल इं.कॉलेज, आरॉंज
एस.ए.एस.एकेडमी, गोविन्दपुर, मक्खनपुर
कारगिल अमरशहीद इं.कॉलेज, मक्खनपुर
नारायण महाविद्यालय, शिकोहाबाद
संत केशवानंद महाविद्यालय, अधमपुर
एन.एस.एस.कैम्प, डंडियामई

प्रश्न करते मंजर–उल वासै।

जूनियर, इंटरमीडिएट और ग्रेजुएट वर्ग तक के लगभग 3000 छात्र–छात्राओं ने उत्साह के साथ अपने–अपने विद्यालय में आयोजित प्रतियोगिता में भाग लिया।

विद्यालय–महाविद्यालयों ने कार्यक्रम में पूर्ण सहयोग दिया, जिसके लिए शब्दम् आभारी है। प्रश्नमंच कार्यक्रम 'शब्दम्' सलाहकार मंजर–उल वासै एवं शब्दम् टीम के ऊर्जान्वित प्रयास के कारण उपरोक्त सफलता तक पहुंचा है।

शब्दम संस्था द्वारा आयोजित कार्यक्रम में छात्र को पुरस्कार देते अतिथि।

शब्दम ने छात्रों को पुरंस्कृत किया

शिकोहाबाद। गांधी जयन्ती के उपलक्ष्य में शब्दम् संस्था ने अलग-अलग स्थानों पर कार्यक्रम किये थे। उनके समापन पर प्रश्नमंच कार्यक्रम के दौरान सही उत्तर देने वाले छात्रों को पुरस्कृत किया। शब्दम संस्था ने एक अक्टूबर को पर्यावरण मित्र संस्था के साथ मिलकर गांधी साहित्य एवं जैविक मेला प्रदर्शनी हिन्द लैम्पस गेट नं.दो के पास लगाई गई। दो अक्टूबर को केसी क्लब, पर्यावरण मित्र और शब्दम् के सयुक्त तत्वावधान में 'बेकार सखा' नगर में बड़े ... जागरुकता और स्वच्छता अभियान चलाया। उसमें सफाई ... को कचरा प्रबन्धन और गन्दगी से होने वाली ... से सात अक्टूबर तक ...

म हिन्दी प्रश्न मंच में 31 छात्र रहे उत्तर दे...

...धी जयंती साप्ताहिक कार्य...

'प्रश्नों का काम ज्ञान में वृद्धि करना है'

शिकोहाबाद (ब्यूरो)। शब्दम संस्था द्वारा हिंदी प्रश्नमंच का आयोजन पालीवाल पब्लिक स्कूल एवं ग्राम बलीपुर स्थित स्वामी विवेकानंद मेमोरियल स्कूल में कराया गया। इसमें लगभग 250 विद्यालय के विद्यार्थियों ने भाग लिया। प्रश्न मंच उपसमिति के अध्यक्ष मंजर उल-... ने कार्यक्रम में बताया कि कार्यक्रम का उद्देश्य छात्र-छात्राओं की ... लेना नहीं अपितु उनके ज्ञान में वृद्धि करना है। देशप्रेम एवं देशभ... जुड़े प्रश्नमंच कार्यक्रम में बच्चों ने बहुत उत्सुकता के साथ भाग... विद्यालय के कुल 31 छात्र-छात्राओं को पुरस्कृत किया गया। का... लक्ष्मीनारायण यादव, राजीव मुद्गल, डा. प्रताप, अंजू मुद्गल, ... दीपक औहरी आदि उपस्थित रहे।

रामनवमी के उपलक्ष्य में नाट्य मंचन

- **कार्यक्रम विषय** : 'मर्यादा पुरुषोत्तम राम'
- **दिनांक** : रविवार, 17 अप्रैल 2016 **संयोजन–** केसी क्लब एवं शब्दम्
- **प्रस्तुति** : युवक मंगल दल
- **स्थान** : हिन्द लैम्प्स परिसर स्थित संस्कृति भवन, लॉन

भारतीय संस्कृति राममय है। महाकवियों ने राम के जीवन का चित्रण करते हुए, राम को विभिन्न परिस्थितियों में प्रस्तुत करते हुए एक मॉडल जीवन का आदर्श प्रस्तुत किया है।

'रामायण' और 'रामचरित मानस' हमारे पारिवारिक और सामाजिक ही नहीं, राजनैतिक जीवन का संविधान बन चुके हैं। आज का भारत सदियों तक रामायण सुनकर, पढ़कर, रामलीला का आयोजन कर अपने आदर्शों और जीवनमूल्यों का निर्माण कर सका है।

राम ने हमें सिखाया परिवार में, समाज में, सुख दुःख में कैसे जीवन जिया जाता है। रामायण ने हमें सौन्दर्य पर मुग्ध होना सिखाया, त्याग की महत्ता समझायी, स्वार्थ से ऊपर उठने का संदेश दिया, संकुचित जीवन का तिरस्कार कर उदार जीवन जीना सिखाया। कर्तव्य और अकर्तव्य का बोध कराया, जीवन में हम जिन पात्रों के सम्पर्क में आते हैं, उनसे व्यवहार करना रामायण ने सिखाया। सच तो ये है कि हर भारतीय राम के परिवार का सदस्य होता है। वह केवल अच्छाइयों से प्रेम करना ही नहीं सीखता बल्कि बुराइयों से घृणा करना भी सीखता है। हम सब रामायण की पाठशाला के छात्र हैं।

केवट संवाद।

हमारे संस्कार रामायण की देन हैं।

उपर्युक्त उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए शब्दम् एवं केसी क्लब के संयुक्त तत्त्वावधान में 'मर्यादा पुरुषोत्तम राम' एक नाट्य मंचन का आयोजन स्थानीय युवक मंगल दल निजामपुर गढ़ूमा द्वारा किया गया तथा राम के मर्यादा पुरुषोत्तम चरित्र एवं केवट का प्रसंग दिखाया गया।

युवक मंगल दल के कलाकारों ने केवट प्रसंग के अंतर्गत दिखाया, भगवान राम जैसे ही गंगा नदी के किनारे पहुंचे, वहां पर निषादराज केवट अपनी नाव के साथ खड़े थे। केवट को जैसे ही पता चला कि तीनों लोक के तारण हार आज मेरी नाव में बैठने वाले हैं, उन्होंने प्रभु राम से हाथ जोड़कर मना कर दिया। केवट ने कहा, 'हे प्रभु आपके चरणों की रज से एक शिला, सुन्दर नारी बन गई। मेरी तो एक काठ की नाव है, यह मेरा

रोजगार है अगर यह नारी बन गई तो मेरा क्या होगा। प्रभु हँसने लगे। और केवट के मन में जो भावना थी वह केवट ने प्रभु राम के आगे रखते हुए कहा कि 'हे प्रभु यदि आप अपने चरण मुझसे धुलवालें तो मैं आपको यह तट पार करा सकता हूँ।' प्रभु राम का मौन, केवट का मन पढ़ रहा था। प्रभु राम ने केवट से मुस्कराते हुए कहा कि हे केवट, जो तुम्हारे मन में है वह इच्छा पूर्ण कर लो और केवट प्रभु राम के चरण धोने के बाद श्रीराम को अपनी नाव में बैठाकर धीरे–धीरे आगे बढ़ने लगे।

बॉलीवुड की संस्कृति के उपरान्त भी गाँव में आज भी रामलीला की संस्कृति नजर आती है। जो संस्थाएं/ग्राम समिति इस प्रकार के आयोजन करती हैं या करातीं हैं, उन्हें समाज का पूरा संरक्षण मिलना चाहिए ताकि यह संस्कृति जीवित रह सके।

कैकेयी मंथरा संवाद।

शब्दम् ने कराया राम पर नाट्य मंचन

SHIKOHABAD: शब्दम् एवं केसी क्लब के संयुक्त तत्वाव
में मर्यादा पुरुषोत्तम राम के जीवन पर आधारित नाट्य मंचन
योजन किया गया. आयोजन हिन्द लैम्पस परिसर स्थित संस
वन में रामनवमी के उपलक्ष में किया गया. इसमें युवक मंगल
कलाकारों ने अपनी प्रस्तुति से सभी का मन मोह लिया. कार्य
शुभारंभ भगवान श्रीराम की आरती के साथ किया गया.
म्पस के महाप्रबन्धक कर्नल वीएस यादव ने युवक मंगल दल
रक्षक रामनरेश का हरित कलश के साथ
भिनंदन किया.

मर्यादा पुरुषोत्तम राम के जीवन पर नाट्य मंचन

रामकथा का मंचन देख दर्शक हुए निहाल

कार्यक्रम

नाट्यमंचन टीम का समूह छायांकन।

गांधी जयंती

- **कार्यक्रम** : गांधी जयंती साप्ताहिक कार्यक्रम
- **दिनांक** : 1 अक्टूबर से 7 अक्टूबर

गांधी जयन्ती के उपलक्ष्य में शब्दम् संस्था ने अलग–अलग स्थानों पर कार्यक्रम किए जिनमें 1 अक्टूबर को पर्यावरण मित्र संस्था के साथ मिलकर गांधी साहित्य एवं जैविक मेला प्रदर्शनी हिन्द लैम्प्स गेट के पास लगाई गई।

2 अक्टूबर को के.सी. क्लब, पर्यावरण मित्र और शब्दम् के संयुक्त तत्त्वावधान में 'बेकार सखा' नगर में बड़े स्तर पर जागरूकता एवं स्वच्छता अभियान चलाया गया, जिसमें सफाई के साथ–साथ लोगों को कचरा प्रबन्धन एवं गन्दगी से होने वाली बीमारियों के संदर्भ में बताया गया।

3 अक्टूबर से 7 अक्टूबर तक क्रमशः जॉर्जियस एकेडमी, मक्खनपुर, ब्राइट स्कॉलर्स, सिंरसागंज, कराटियंस स्कूल अराँव एवं चन्द्रवती मटरूमल सरस्वती शिशु मन्दिर शिकोहाबाद में राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय की प्रस्तुति 'गांधी एक जीवनी' एवं कचरा प्रबन्धन पर आधारित फिल्म दिखायी गई। इसके उपरान्त गांधीजी पर आधारित

गांधी जयन्ती पर गांधी साहित्य प्रदर्शनी का दृश्य।

गांधी जयन्ती के उलक्ष्य में सफाई अभियान के दृश्य।

प्रश्नमंच कार्यक्रम भी विद्यार्थियों के मध्य किया गया। जिन विद्यार्थियों ने प्रश्नों का सही उत्तर दिया उन्हें प्रोत्साहन स्वरूप लेखनी प्रदान की गई। प्रश्नमंच कार्यक्रम का संचालन मंज़र–उल वासै ने किया। कार्यक्रमों के दौरान लक्ष्मीनारायण यादव, डॉ. चन्द्रवीर जैन, अभिषेक श्रीवास्तव उपस्थित रहे।

गांधी जयन्ती प्रश्नमंच में उपस्थित छात्र।

गांधी जयन्ती पर प्रश्न करते मंज़र–उल वासै।

शब्दम संस्था द्वारा आयोजित कार्यक्रम में छात्र को पुरस्कार देते अतिथि।

शब्दम ने छात्रों को पुरस्कृत किया

शिकोहाबाद। गांधी जयन्ती के उपलक्ष्य में शब्दम् संस्था ने अलग-अलग स्थानों पर कार्यक्रम किये थे। उनके समापन पर प्रश्नमंच कार्यक्रम के दौरान सही उत्तर देने वाले छात्रों को पुरस्कृत किया। शब्दम संस्था ने एक अक्टूबर को पर्यावरण मित्र संस्था के साथ मिलकर गांधी साहित्य एवं जैविक मेला प्रदर्शनी हिन्द लैम्प्स गेट नं.दो के पास लगाई गई। दो अक्टूबर को केसी क्लब, पर्यावरण मित्र और शब्दम् के सयुक्त तत्वावधान में 'बेकार सखा' नगर में बड़े स्तर पर जागरूकता और स्वच्छता अभियान चलाया। उसमें सफाई के साथ-साथ लोगों को कचरा प्रबन्धन और गन्दगी से होने वाली बीमारियों के संदर्भ में बताया। तीन से सात अक्टूबर तक क्रमशः जॉर्जियस एकेडमी मक्खनपुर, ब्राइट स्कॉलर्स सिंरसागंज, कराटियंस स्कूल अरांव, चन्द्रवती मटरूमल सरस्वती शिशु मन्दिर शिकोहाबाद में गांधी संग्राहलय द्वारा निर्मित गांधी एक जीवन परिचय और कचरा प्रबन्धन पर आधारित फिल्म दिखायी। उसके उपरान्त गांधीजी पर आधारित प्रश्नमंच कार्यक्रम भी विद्यार्थियों के मध्य किया। जिन विद्यार्थियों ने प्रश्नों का सही उत्तर दिया उन्हें प्रोत्साहन स्वरूप लेखनी प्रदान की। प्रश्नमंच कार्यक्रम का संचालन मंजर उलवासै ने किया। कार्यक्रमों के दौरान लक्ष्मीनारायण यादव, डा. चन्द्रवीर जैन, अभिषेक श्रीवास्तव आदि मौजूद रहे।

गांधी जयंती साप्ताहिक कार्यक्रम का समापन

गांधी जयंती साप्ताहिक कार्यक्रम का समापन

प्रश्नमंच कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने दिखायी प्रतिभा

गांधी जयंती साप्ताहिक कार्यक्रम का समापन

महिला रोजगारपरक शैक्षणिक कार्यक्रम

सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र

पिछले एक दशक से शब्दम् सिलाई केन्द्र लगभग 2000 बालिकाओं/महिलाओं को सिलाई कला में निपुण बनाकर स्वावलम्बी बना चुका है।

अभी तक संस्था उत्तर प्रदेश के फिरोजाबाद जिले के नगला बांध, बढ़ाईपुरा, झमझमपुर, बैरई, मेवली, नगला सुन्दर, खतौली, रसूलपुर, नगला टीकाराम, छोटी सियारमऊ, बड़ी सियारमऊ, नगला लोकमन, नगला जवाहर, नगला ऊमर, बड़ी गैलरई, नगला सीताराम, हरगनपुर, नगला चन्दा, लाछपुर, छेछापुर, सुजावलपुर आदि ग्रामों में सिलाई केन्द्र संचालित कर चुकी है।

वर्तमान में संस्था दो सिलाई केन्द्र हिन्द लैम्प्स परिसर में एवं दो सिलाई केन्द्र ग्रामीण अंचल के ग्राम मेवली और ग्राम दतावली में चला रही है।

सिलाई केन्द्र में सिलाई प्रशिक्षण सीख रहीं कुछ छात्राओं के विचार....

मुझे 6 माह पूरे हो चुके हैं। सिलाई केन्द्र में आने से पहले मेरे अन्दर आत्म विश्वास की कमी थी यहां आने से न सिर्फ मैंने ब्लाउज, पेटीकोट एंव अन्य कपड़े सिलने सीखे बल्कि इस कला ने मरे आत्मविश्वास में भी वृद्धि की है। अब मुझे नये लोगों का सामना करते हुये घबराहट नहीं होती है। मैं शब्दम् संस्था एंव शिक्षिका को इसके लिए धन्यवाद देती हूँ।

सुशीला, छात्रा, सिलाई केन्द्र

मैं बेहद गरीब परिवार से हूँ। मुझे अभी सिलाई सीखते हुए मात्र तीन माह हुए हैं। पहले मेरा परिवार मुझे सिलाई केन्द्र में जाने के लिए मना करता था परन्तु अब मैं इस कला के माध्यम से रोज लगभग 80 से 100 रूपये तक कमा लेती हूँ। अब मेरा परिवार इस निर्णय में मेरे साथ है।

प्रेमलता, छात्रा, सिलाई केन्द्र

सिलाई प्रशिक्षित देती शिक्षिका मधु शुक्ला।

सिलाई केन्द्र का एक दृश्य।

'शब्दम्' बालिका-महिला पाठशाला

सरोजदेवी अपने जीवन के 64 वसंत पार कर चुकी हैं। बेटी से लेकर दादी अम्मा तक का सफर पिछले 64 वर्षों में सरोजदेवी ने तय किया। गाँव के लोग उन्हें प्यार से काकी अम्मा बुलाते हैं। घर में सम्पन्नता है, खुशहाली है; समाज में एक प्रतिष्ठा भी है, पर आज भी सरोजदेवी के मन में एक टीस है कि उन्होंने कभी स्कूल का मुँह नहीं देखा।

शब्दम् टीम ने जब सर्वे के दौरान सरोजदेवी से बात की तो उन्होंने बताया कि बचपन में उनके गाँव से स्कूल करीब 7 किलोमीटर दूर था। घर के बच्चे तो पढ़ने जाते थे पर किसी अनहोनी की वजह से घर की बच्चियों को उस समय स्कूल जाने या पढ़ने की छूट नहीं थी। अगर उनके शब्दों में कहें तो वो कहती हैं–''लला मैं तोए का बताऊं, मोए बड़ी शर्म लगत है जब मैं काउ कागज पै अंगूठा लगाती हूँ। अब जा जन्म तौ कछु हैवे ते रहो, पर मैं अपनी बालिकन को खूब पढ़ाए रही हूँ''। शब्दम् टीम ने उनसे कहा कि काकी जी आप चिन्ता मत करिए हम आपके गाँव में एक ऐसी पाठशाला खोलने जा रहे हैं जिसमें वे महिलाएँ जो शिक्षा की धारा से किसी भी प्रकार से छूट गईं हों उन्हें साक्षर बनाया जाएगा। क्या आप इसमें पढ़ने आएंगी? काकीजी ने बड़े गर्व से कहा–''लला भगवान तोए बड़ी लम्बी उमर दे''। इसके बाद काकी जी ने शब्दम् टीम के साथ गाँव का सर्वे किया

पाठशाला में शिक्षण कार्य का एक दृश्य।

और गाँव की अन्य महिलाओं को भी पाठशाला में पढ़ने के लिए प्रेरित किया।

इस प्रकार ग्राम छटनपुर में शब्दम् ने 17 मई 2016 को ग्रामीण बालिका–महिला पाठशाला का प्रारम्भ, गाँव के सम्मानित व्यक्ति श्री जगन्नाथ सिंह द्वारा वाग्देवी के चित्र पर माल्यापर्ण कर किया। गाँव की महिलाओं में बालिका–महिला पाठशाला को लेकर काफी उत्साह था।

बालिका–महिला पाठशाला ने सरोज, पूरनदेवी, सुमन, कमलादेवी सुमन, भाग्यश्री, मिथलेश, निर्मलादेवी, प्रेमलता, उर्मिला, एकता आदि को अक्षर ज्ञान एवं अंक ज्ञान देकर साक्षर बनाया।

बालिका पाठशाला में उपस्थित बुजुर्ग महिला।

बालिका-महिला पाठशाला बनाएगी साक्षर

अमर उजाला ब्यूरो

शिकोहाबाद। ग्राम छटनपुर में शब्दम् ने मंगलवार को ग्रामीण बालिका-महिला पाठशाला का शुभारंभ किया। पाठशाला में ग्रामीण महिलाओं को शिक्षा के महत्व के बारे में बताया।

पाठशाला का कार्यक्रम का शुभारंभ गांव के ही जगन्नाथ सिंह ने मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण कर किया। गांव की महिलाओं में बालिका-महिला पाठशाला के प्रति काफी उत्साह देखा गया। शब्दम् समन्वयक दीपक औहरी ने गांव के लोगों के बीच शब्दम् और बालिका-महिला पाठशाला चलाने के उद्देश्य को समझाया। उन्होंने कहा कि गांव की महिलाएं स्कूल में पढ़ने नहीं जा सकतीं। उनकी सुविधा के लिए यह पाठशाला प्रारंभ की गई है। इसमें गांव की बालिकाएं व महिलाएं पढ़ना सीख सकती हैं।

शिक्षिका रेखा देवी ने महिलाओं को पढ़ाई का महत्व बताया।

शब्दम द्वारा छटनपुर में शुरू की गई ग्रामीण बालिका-महिला पाठशाला और पढ़ने पहुंची सरोज देवी।

महिलाओं में दिखी साक्षर बनने की ललक, कहा अब होगा सपना पूरा

उन्होंने कहा कि हम कुछ ही दिनों में पढ़कर साक्षर हो सकते हैं। इससे हम समाचार-पत्र पढ़कर देश-दुनिया के बारे में नई-नई जानकारियां प्राप्त कर अपने ज्ञान में वृद्धि कर सकते हैं। अरविंद कुमार ने सहयोग किया। बालिका-महिला पाठशाला में पहले दिन सरोज देवी, पूरन देवी, सुमन, कमला देवी सुमन, भाग्यश्री, मिथलेश, निर्मला देवी, प्रेमलता, उर्मिला, एकता को अक्षर ज्ञान कराया गया। 64 वर्षीय सरोज देवी ने भी ... वह अपने समय में पढ़ नहीं सकीं क्योंकि स्कूल घर से 7 किमी दूर था। घर के बच्चे पढ़ने जाते थे लेकिन लड़कियों को ये छूट नहीं थी। दस्तखत की जगह जब अंगूठा लगाना पड़ता है शर्म महसूस होती है। लेकिन ...

शब्दम समन्वयक दीपक औहरी बालिका-महिला पाठशाला को संबोधित करते हुये। Photo-DLA

शब्दम् ने प्रारम्भ की बालिका पाठशाला

शिकोहाबाद। ग्राम छटनपुर में शब्दम् ने ग्रामीण बालिका-महिला पाठशाला का ...रम्भ, गांव के सम्मानित व्यक्ति जगन्नाथ सिंह द्वारा बाग्देवी के चित्र पर ...यार्पण कर किया। समन्वयक दीपक औहरी ने गांव के लोगों के बीच शब्दम् ...देश्य और बालिका-महिला पाठशाला चलाने के उद्देश्य को समझाया। ...का रेखा देवी ने महिलाओं को पढ़ाई का महत्व बताया। इस अवसर पर ... कुमार, सरोज, पूरन देवी, सुमन, कमला देवी सुमन, भाग्यश्री, मिथलेश, ...वी, प्रेमलता, उर्मिला, एकता मौजूद रहीं।

ग्राम छटनपुर में 'शब्दम्' ने प्रारम्भ की बालिका-महिला पाठशाला

शिकोहाबाद। ग्राम छटनपुर में शब्दम् ने ग्रामीण बालिका-महिला पाठशाला का प्रारम्भ, गांव के सम्मानित व्यक्ति जगन्नाथ सिंह द्वारा बाग्देवी के चित्र पर माल्यापर्ण कर किया। गांव की महिलाओं में बालिका-महिला पाठशाला को लेकर काफी उत्साह था। शब्दम् समन्वयक दीपक औहरी ने गांव के लोगों के बीच शब्दम् के उद्देश्य और बलिका-महिला पाठशाला चलाने के उद्देश्य को समझाया, शिक्षका रेखा देवी ने महिलाओं को पढाई का महत्व बताया। इस अवसर पर अरविन्द कुमार ने सहयोग किया। बालिका-महिला पाठशाला में पहले दिन सरौज, पूरन देवी, सुमन, कमला देवी सुमन, भाग्यश्री, मिथलेश, निर्मला देवी, प्रेमलता, उर्मिला, एकता ने अक्षर ज्ञान को जाना और समझा।

वार्षिक कार्यक्रम

महिला सशक्तिकरण

महिला रोजगारपरक शैक्षणिक कार्यक्रम

रक्षाबन्धन एवं श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के उपलक्ष्य पर दो दिवसीय प्रशिक्षण

- **कार्यक्रम विषय** : रक्षाबन्धन एवं श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के उपलक्ष्य पर दो दिवसीय प्रशिक्षण
- **दिनांक** : 8 से 9 अगस्त 2016
- **स्थान** : हिन्द लैम्प्स परिसर स्थित सिलाई केन्द्र

हिन्द लैम्प्स परिसर स्थित शब्दम् सिलाई केन्द्र में रक्षाबन्धन एवं श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के उपलक्ष्य में दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में छात्राओं को मिठाई प्रशिक्षण के अंतर्गत मूंग की दाल का हलवा एवं शाही टोस्ट बनाना सिखाया गया तथा मेंहदी प्रशिक्षण के अंतर्गत उन्होंने पेपर पर फूल, पत्ती, मोर को पहले अलग–अलग फिर एक साथ मिलाकर डिजाइन बनाना सीखा।

प्रशिक्षण के दूसरे दिन छात्राओं ने हाथ पर मेंहदी लगाना, राखी तैयार करना, रंगोली एवं तोरण बनाना सीखा। इस दो दिवसीय प्रशिक्षण में छात्राओं ने बड़ें उत्साह के साथ प्रतिभागिता की और उन्होंने आग्रह किया कि इस तरह के आयोजन समय–समय पर संस्था द्वारा कराए जाते रहने चाहिए।

इस दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में श्रीमती मधु शुक्ला, कु. गरिमा शुक्ला एवं कु. कीर्ति द्वारा सभी छात्राओं को प्रशिक्षण दिया गया।

उत्पम डिस

शब्दम् ने कराया दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम

शिकोहाबाद। हिन्दलैम्प्स परिसर स्थित शब्दम् सिलाई केन्द्र में रक्षाबन्धन एवं श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के उपलक्ष्य में दो दिवसयी कार्यशाला का आयोजन किया गया। आयोजन में पहले दिन छात्राओं को मिठाई प्रशिक्षण के अंतर्गत को मूंग की दाल का हलुवा एवं शाही टोस्ट ... तथा मेंहदी प्रशिक्षण ... पर फूल, पत्ती, ...-अलग फिर एक ...जाइन को बनाना ... दूसरे दिन छात्राओं ... लगाना, राखी तैयार ... तोरण बनाना सीखा। ... प्रशिक्षण में छात्राओं ने ... साथ प्रतिभागिता की और ... किया कि इस तरह के ...मय-समय पर संस्था द्वा... रहने चाहिए।

शब्दम् ने कराया दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम

छात्राओं को प्रशिक्षण देती शिक्षिका गरिमा शुक्ला।

वार्षिक कार्यक्रम

महिला सशक्तिकरण

महिला रोजगारपरक शैक्षणिक कार्यक्रम

शब्दम् दस दिवसीय ग्रीष्मकालीन शिविर

- **कार्यक्रम** : शब्दम् दस दिवसीय ग्रीष्मकालीन शिविर
- **दिनांक** : 1 जून 2016 से 10 जून 2016
- **स्थान** : हिन्द लैम्प्स परिसर स्थित सिलाई केन्द्र

दस दिवसीय ग्रीष्मकालीन शिविर ने दी, महिलाओं व बालिकाओं को स्वावलम्बी बनने की प्रेरणा

शब्दम् संस्था ने पिछले वर्ष ग्रीष्मकालीन शिविर का आयोजन किया था। पिछले वर्ष की कुछ छात्राएं, लगातार ग्रीष्मकालीन शिविर को लेकर सम्पर्क में थीं। इस वर्ष संस्था ने 1 जून से 10 जून तक ग्रीष्मकालीन शिविर का आयोजन किया। ग्रीष्मकालीन शिविर का उद्देश्य सिलाई कला, पाक कला, सौन्दर्यीकरण, मेहँदी कला के माध्यम से छात्राओं को स्वावलम्बी बनाना था, जिससे वे इन कलाओं के माध्यम से रोजगार अर्जित कर सकें।

निम्न कलाएं सिखायी गईं।

सिलाई कला – शिक्षिका मधु शुक्ला ने सर्वप्रथम छात्राओं को मशीन के रख–रखाव तथा मशीन पर किस प्रकार कार्य किया जाता है, समझाया। इसके बाद सिलाई के उपयोग में आने वाली सभी सामग्रियां बताई। डबल तनी वाले बैग, स्पंज बैग, साधारण बैग, पेटीकोट, ब्लाउज बनाना सिखाया।

पाक कला – शिक्षिका गरिमा शुक्ला ने छात्राओं को पाक कला में स्वास्थ्य के अनुकूल मसाले, तेल एवं मिर्च के मात्रा पर विशेष ध्यान रखने के लिए कहा। उन्होंने उत्तम, कश्मीरी दम आलू, बेसन का ढोकला, पंजाबी छोले, दाल मखनी, फ्रेंच फ्राइड राइस बनाने की विधि सिखायी।

सौन्दर्यीकरण – शिक्षिका गरिमा शुक्ला ने सौन्दर्यीकरण कला के अंतर्गत छात्राओं को बताया कि किस प्रकार अच्छा मेकअप आपके आत्मविश्वास को बढ़ाता है बल्कि आपको रचनात्मक और कलात्मक भी बनाता है। सौन्दर्यीकरण कला के अंतर्गत थ्रेडिंग, केश

मेहँदी कला का प्रदर्शन करती बालिका।

ढोकला बनाने की विधि को बतातीं शिक्षिका गरिमा शुक्ला।

सज्जा, फेशियल ब्लीच, वेक्सिंग, मेनीक्योर, पेडीक्योर, साधारण साड़ी, बंगाली साड़ी, सीधे पल्ले वाली साड़ी, महाराष्ट्रीय साड़ी, एवं फिश वाली साड़ी सिखायी।

मेहँदी कला – शिक्षिका अमृषा सिंह ने छात्राओं को बताया कि मेहँदी कला आज एक बड़े व्यवसाय के रूप में बदल चुकी है यदि आप अच्छी मेहँदी लगाना सीख जाएं तो आप इस कला को रोजगार के रूप में भी अपना सकते हैं। साथ ही इस कला को सीखने से आप स्वतः ही अल्पना बनाना सीख जाएंगे। इस कला के अंतर्गत अरेविक, ब्राइडल, फुलहेण्ड़, राजस्थानी, आगे हाथ–पीछे हाथ, किसी भी शुभ अवसर पर लगायी जाने वाली मेहँदी की विधि को सिखाया।

ग्रीष्मकालीन शिविर के आखिरी दिन, छात्राओं ने सीखी कला को कैटवॉक के माध्यम से एवं रंगारंग कार्यक्रम कर प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर शब्दम् अध्यक्ष किरण बजाज ने फोन पर अपने संदेश में छात्राओं के लिए सुखद और उज्वल भविष्य की कामना की।

पत्राचार एवं बैंकिग – शब्दम् वरिष्ठ सलाहकार श्री मंज़र–उल वासै द्वारा समर कैम्प में अंतिम दो दिन, सामान्य पत्राचार, बैंकिग इत्यादि की जानकारी दी गई।

समर कैम्प में भाग लेनेवाली छात्राओं की कलम से -

ऊषा देवी उम्र–35 वर्ष – "सुबह उठना, घर के काम करना, बच्चों को संभालना, पति का लंच तैयार करना, शाम को भी कुछ इसी प्रकार के घर के कार्य, शायद इस ग्रीष्मकालीन शिविर से पहले मेरे जीवन का सच यही था। जब मैंने इस ग्रीष्मकालीन शिविर में भाग लिया तो मेरे जीवन के कई सच

मेहँदी लगाने का अभ्यास करतीं छात्राएं।

सौन्दर्यीकरण का दृश्य।

बैकिंग एवं पत्राचार का ज्ञान देते श्री मंजर–उल वासै।

फेसियल करने की विधि को सिखातीं शिक्षिका।

बदल गए, अब मुझे समझ में आ गया है कि यदि आप जीवन जीने की कलाएँ सीख लेती हैं, तो आप स्वतः ही खुद को स्वावलम्बी अनुभव करती हैं और फिर ये रोजमर्रा के घर के कार्य भी रचनात्मक तरीके से आनन्द देते हुए पूरे होते हैं और जब जीवन में किसी कठिनाई का अनुभव होता है तो इन कलाओं के माध्यम से आप आमदनी भी अर्जित कर सकती हैं''।

करिश्मा उम्र–12 वर्ष – मैंने पिछले वर्ष भी समर कैम्प में भाग लिया था। मेरा गाँव नगला खंगर यहां से 22 किलोमीटर दूर है। जैसे ही मुझे पता चला कि शब्दम् का ग्रीष्मकालीन शिविर प्रारम्भ होने वाला है, मैंने इसमें भाग लेने के लिए फॉर्म भर दिया। माधौगंज में मेरी नानी रहती है, मैं इस समर कैम्प के लिए अपनी नानी के यहा से आ जाती हूँ।

आकांक्षा पाण्डेय, उम्र 10 वर्ष – ग्रीष्मकालीन शिविर से पहले मैं चाय बनाना भी पसन्द नहीं करती थी, परन्तु यहां मैंने न केवल उत्तपम बनाना सीखा बल्कि उसे घर पर जाकर बनाया। मैं उत्तपम बनाने को लेकर इतनी उत्साहित थी कि आस–पास के तीन–चार घरों में धनिया पूछा और आखिर में धनिया ढूढंकर मैंने सबसे पहले अपने बाबा को अपने हाथ से बना हुआ उत्तपम खिलाया।

मेनीक्योर विधि सीखतीं प्रतिभागी।

सिलाई सीखतीं छात्राएं।

समूह छायांकन।

वार्षिक कार्यक्रम

महिला सशक्तिकरण

महिला सांस्कृतिक कार्यक्रम

'हर बेटी को दुर्गा बनना होगा'

- **कार्यक्रम** : 'हर बेटी को दुर्गा बनना होगा' विषय पर नाटक/नृत्य नाटिका प्रतियोगिता
- **दिनांक** : 22 अक्टूबर 2016 • **प्रतिभागी विद्यालय** : सिरसागंज से डिवाइन इण्टरनेशनल एकेडमी, ब्राइट स्कालर्स एकेडमी तथा शिकोहाबाद से ज्ञानदीप पब्लिक स्कूल एवं पुरातन सरस्वती विद्यालय
- **स्थान** : हिन्द लैम्प्स परिसर स्थित संस्कृति भवन

'हर बेटी को दुर्गा बनना होगा' विषय पर शब्दम् ने नाटक/नृत्य नाटिका का आयोजन किया। कार्यक्रम में डिवाइन इण्टर नेशनल एकेडमी, सिरसागंज, ब्लूमिंग बडस्, शिकोहाबाद, ब्राइट स्कालर्स एकेडमी, सिरसागंज, ज्ञानदीप पब्लिक स्कूल एवं पुरातन सरस्वती विद्यालय शिकोहाबाद की नाट्य टीमों ने भाग लिया, कार्यक्रम में पारदर्शिता बनाने के लिए प्रत्येक विद्यालय को देवी के नाम से संबोधित किया गया। निर्णायक समिति से लेकर किसी भी दर्शक को यह पता नहीं था कि कौन सा दल किस विद्यालय से है।

कार्यक्रम में जहां एक तरफ बच्चों ने कन्या भ्रूण हत्या, बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ, एसिड़ अटेक एवं आम स्त्री को देवी के स्वरूप में दिखाकर यह संदेश दिया कि स्त्री अबला नहीं है। बस उसे अपने अन्दर की शक्तियों को एकत्रित करना है। वह भी राष्ट्र निर्माण एवं समाज निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकती है।

नारी के सम्मान में नाट्य प्रस्तुति का दृश्य।

नाट्य, नृत्य की प्रस्तुति।

स्कूली छात्राओं को रास्ते में छेड़ते आवारा लड़कों के नाट्य मंचन का दृश्य।

पूरे कार्यक्रम में दर्शकों की स्थिति कठपुतली की तरह थी। नाट्य टीमें जब चाहती तब दर्शक हँसते, उदास हो जाते, कभी अपने आँसुओं को दूसरों से छिपाते हुए नजर आते। तालियों का निरन्तर क्रम इस बात का प्रमाण था कि दर्शक पूरी तरह नाटक प्रस्तुतिकरण में डूब गए हैं।

अंततः निर्णायक समिति ने सभी टीमों को लगभग बराबर के अंक दिए लेकिन डिवाइन इंटरनेशनल एकेडमी सिरसागंज ने प्रथम तथा ब्लूमिंग बड्‌र्स ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

हर बेटी को दुर्गा बनना होगा का मंचन

अमर उजाला ब्यूरो

शिकोहाबाद।

'हर बेटी को दुर्गा बनना होगा' विषय पर शब्दम ने नाटिका का आयोजन किया। कार्यक्रम में डिवाइन इंटर नेशनल एकेडमी सिरसागंज, ब्राइट स्कालर्स एकेडमी सिरसागंज, ब्लूमिंग बड्स, ज्ञानदीप पब्लिक स्कूल एवं पुरातन सरस्वती विद्यालय शिकोहाबाद की टीमों ने भाग लिया।

पारदर्शिता बनाने के लिए प्रत्येक विद्यालय को देवी के नाम से संबोधित किया गया। कार्यक्रम में एक ओर बच्चों ने कन्या भ्रूण हत्या, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ, एसिड अटैक एवं आम स्त्री को देवी के स्वरूप में दिखाकर संदेश दिया कि स्त्री अबला नहीं है। वह भी राष्ट्र निर्माण एवं सम... निर्माण में भूमिका अदा क... सकती है। प्रतियोगिता में डिवाइ... इंटरनेशनल एकेडमी सिरसागंज ने प्रथम और ब्लूमिंग बड्स ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

हर बेटी को दुर्गा बनना होगा नाटक प्रतियोगिता में प्रस्तुति देते विद्यार्थी

शब्दम ने नाटिका का आयोजन किया

नाटक प्रतियोगिता में बच्चों ने दिखाई प्रतिभा

शिकोहाबाद में प्रतियोगिता में प्रतिभाग करते हुए विद्यालय के बच्चे।

शिकोहाबाद| हिन्दुस्तान संवाद

महिला सांस्कृतिक कार्यक्रम

'बहन बचाओ अभियान' विचार गोष्ठी

- **कार्यक्रम** : 'बहन बचाओ अभियान' विचार गोष्ठी
- **दिनांक** : 20 अगस्त 2016
- **स्थान** : हिन्द लैम्प्स परिसर स्थित संस्कृति भवन

संस्था द्वारा बेटों और बेटियों के बीच बढ़ते अंतर एवं वर्तमान परिदृश्य में बेटियों के साथ होने वाले भेदभाव तथा अत्याचार के विरुद्ध आवाज उठाते हुए 'बहन बचाओ अभियान' विचार गोष्ठी का आयोजन किया।

इस गोष्ठी में बहन के अधिकार की रक्षा कैसे हो बिन्दु पर व्यापक चर्चा की गई।

हमारे देश में लड़की को ससुराल में कभी उसको अधिकार नहीं मिलते, सिर्फ जिम्मेदारियां मिलती हैं। पहले ससुर, पति, बेटा फिर पोता सभी अधिकारों से वंचित कर देते हैं। अगर बेटी–बहू अपने अधिकारों के लिए मुखर हो तो उसे प्रताड़ित और बदनाम किया जाता है।

भारत के संविधान में जब लड़की को अपने जन्म के परिवार से न्याय संगत लड़कों के साथ बराबरी के हिस्से का प्रावधान है तब भी 90 प्रतिशत लड़कियों को उनके अधिकार क्यों नहीं मिलते? बदलाव उसके पिता एवं परिवार से ही शुरू होना चाहिए। जब माँ–बाप अपनी बेटी को यथोचित आदर, अधिकार एवं अवसर देंगे तो वो जरूर आगे बढ़ेगी।

स्कूलों में शिक्षा, जागरूकता, वादविवाद, नाटक, कहानी, कविता आदि के माध्यम से पुरानी गली हुई सोच को बदलना चाहिए।

विचार गोष्ठी में उपस्थित शिक्षकगण।

स्कूल से ही बहनों और बेटियों के प्रति अन्याय का कड़ा विरोध आना चाहिए'

चर्चा के क्रम में सर्वप्रथम उन आदर्श महिलाओं ने अपनी बात रखी जिन्होंने अपने घर के माध्यम से समाज में एक उदाहरण प्रस्तुत किया कि बेटी और बेटा तुलनाओं से परे है। दोनों के अधिकार समान हैं।

इस क्रम में माया शर्मा ने सभा को बताया कि उनके परिवार में 3 पुत्रियां व एक पुत्र है और उन्होंने अपने पति के साथ यह निर्णय लिया है कि उनके बाद उनकी चल–अचल सम्पत्ति के चार बराबर हिस्से होंगे और सभी बच्चों में समान रूप से बांटे जाएंगे।

सविता शर्मा ने सभा को बताया कि उनकी दो पुत्रियां हैं, उनके या परिवार के मन में कभी नहीं आया कि पुत्र की कमी है। दोनों पुत्रियों को बराबर अवसर दिए गए और जब उनके इण्टर परीक्षा का परिणाम आया तो उनकी प्रतिभा को प्रणाम करते हुए उस समय की केन्द्रीय शिक्षा मंत्री स्मृति ईरानी का पत्र भी आया।

शिक्षिका तनु (डी.आर. इण्टर कॉलेज) ने कहा कि शिकोहाबाद जैसी धरती पर इस प्रकार के विषय पर गोष्ठी मेरी कल्पनाओं से परे थी। मैं संस्था को धन्यवाद देती हूँ कि उन्होंने एक बहुत ही गम्भीर विषय उठाया।

योग शिक्षक डॉ. पी.एस. राना ने कहा कि वर्तमान समय में आवश्यकता योग शिक्षा की है। मैं इस सभा में उपस्थित विद्यालयों से निवेदन करता हूँ कि वे अपने विद्यालय में कम से कम 1 घण्टे योग शिक्षा सुनिश्चित करें। इसके बाद हम स्वयं पाएंगे कि हमारे

छात्र–छात्राएं मानसिक रुप से सशक्त होंगे और छीटाकशी, यौन उत्पीड़न जैसी घटनाओं में स्वतः ही कमी आएगी।

शिक्षक सुनील शर्मा (पुरातन सरस्वती विद्या मन्दिर) ने कहा कि हमें बहनों की सोच या बहन बचाने की बजाय भाइयों की सोच पर कार्य करना होगा। अगर पुरुष वर्ग अपनी मानसिकता में बदलाव कर ले तो 'बहन बचाओ' जैसे अभियान की आवश्यकता नहीं होगी।

प्रवेश यादव (प्रबन्धक, ब्राइट स्कालर्स एकेडमी) ने कहा कि प्रत्येक विद्यालय एवं

समूह छायांकन।

परिवार को बचपन से ही बेटी–बेटे को संस्कारयुक्त शिक्षा देनी चाहिए।

मुकेश मणिकांचन (ब्राइट स्कालर्स एकेडमी) ने कहा कि हम सुधरेंगे जग सुधरेगा। आज हम बहन बचाओ विचार गोष्ठी में हैं। इसका सबसे बड़ा कारण है सांस्कृतिक मूल्यों का अवमूल्यन। उन्होंने कहा कि उन्होंने एक गांव में रामलीला बचाओ समिति भी देखी थी। यदि संस्कृति इसी प्रकार विलुप्त होती रही तो परिणाम और भी गम्भीर होंगे।

शिक्षक विनोद कुमार (न्यू गार्डेनिया विद्यालय) ने कहा कि परिवार की सोच बदलना बहुत आवश्यक है। रियो ओलम्पिक में मेडल जीतने वाली साक्षी मलिक के पिता ने अपनी बेटी को मजबूत करने के लिए पुरुषों से कुश्ती लड़ायी। कोई भी सामान्य पिता शायद यह कार्य नहीं करता पर उन्होंने अपनी पुत्री को पूरी स्वतंत्रता दी। आज भारत ही नहीं पूरा विश्व उस बेटी का गुणगान कर रहा है।

सुश्री रेखा (ज्ञानदीप पब्लिक स्कूल) ने कहा कि हमारी कथनी और करनी एक–सी होनी चाहिए। मेरे पास आज धैर्य, संयम और निर्भीकता जैसे संस्कार हैं तो वो मुझे अपने परिवार से ही मिले हैं। आज पर्यावरण और बहन दोनों को बचाना मुश्किल है, पर यदि हम निर्णय कर लें तो इन्हें जरूर बचा सकते हैं। बहन को सबसे पहले परिवार ही सशक्त बना सकता है।

कृपाशंकर 'शूल' (यंग स्कालर्स एकेडमी) ने कहा कि हमें सर्वप्रथम जननी सुरक्षा की तरफ ध्यान देना होगा। यदि जननी सशक्त होगी तो बच्चे शारीरिक और मानसिक रूप से स्वतः ही सशक्त एवं स्वस्थ होंगे।

अरविन्द तिवारी (वरिष्ठ सलाहकार–शब्दम्) ने विद्यालयों से निवेदन किया कि वे अपने विद्यालयों में समितियां बनाएं। जिन चौराहे या नुक्कड़ों पर छात्राओं के साथ छींटाकशी की जाती है उनके नाम लिखकर प्रशासन को दें। विद्यालयों को इसप्रकार के कदम उठाने होंगे।

मंज़र–उल वासै (कार्यक्रम अध्यक्ष एवं वरिष्ठ सलाहकार शब्दम्) ने कहा कि आज सोच बदलने की आवश्यकता है। हमें अपनी बच्चियों के ऊपर विश्वास रखना होगा। हम अपनी बच्चियों को शिक्षा के क्षेत्र में समान अवसर दें।

पधारे हुए सभी शिक्षक बन्धुओं ने इस जीवंत विषय पर विचार गोष्ठी हेतु शब्दम् संस्था एवं संस्था अध्यक्ष श्रीमती किरण बजाज को धन्यवाद दिया।

'बेटी-बेटे को देनी चाहिए संस्कारयुक्त शिक्षा'

अमर उजाला ब्यूरो

'बहन बचाओ अभियान' विचार गोष्ठी का आयोजन

शिकोहाबाद। शब्दम संस्था द्वारा बेटों और बेटियों के बीच बढ़ते अंतर एवं वर्तमान परिदृश्य में बेटियों के साथ होने वाले भेदभाव व अत्याचार के विरुद्ध आवाज उठाते हुए 'बहन बचाओ अभियान' विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया।

जिसमें संस्था ने 'बहन सशक्त कैसे हो' पर व्यापक चर्चा की। चर्चा का प्रारम्भ संस्था अध्यक्ष किरण बजाज के संदेश से हुआ जिसमें उन्होंने कहा, भारत के संविधान में जब लड़की को परिवार से लड़कों से बराबरी के हिस्से का प्रावधान है तब भी 90 फीसदी लड़कियों को उनके अधिकार क्यों नहीं मिलते? बदलाव उसके पिता एवं परिवार से ही शुरू होना चाहिए। जब मां-बाप अपनी बेटी का यथाशक्ति मान आदर करके और अवसर देंगे, तो वह जरूर

जहां नारी की होती पूजा, वहां रहते हैं भगवान

आगे बढ़ेगी। संगोष्ठी में डीआर इण्टर कालेज की शिक्षिका मोहनी यादव व तनु ने कहा कि जिस घर में नारी की पूजा होती है उसी घर में भगवान निवास करते हैं।

शब्दम संस्था ने किया बहन बचाओ विचार गोष्ठी का आयो-

बेटियों के हित में उठाई आवाज

शब्दम् संस्था ने की बहन बचाओ विचार गोष्ठी

शब्दम द्वारा आयोजित विचार गोष्ठी में उपस्थित संस्था पदाधिकारी और टीचर्स। Photo-DLA

न्याय संगत लड़कों से बराबरी के हिस्से का प्रावधान है, तब भी 90 प्रतिशत लड़कियों को उसके अधिकार क्यों नहीं मिलते? इस दौरान ... सुनील शर्मा, ब्राइट स्कॉलर्स एकेडमी के प्रबंधक प्रवेश यादव, डीआर इंटर कॉलेज की शिक्षिका तनु ने विचार व्यक्त किये। पुरातन सरस्वती विद्या मन्दिर, न्यू गार्डेनिया विद्यालय, यंग स्कॉलर्स एकेडमी विद्यालयों ने गोष्ठी में भाग लिया। मुकेश मणिकांचन ने कहा कि हम सुधरेंगे जग सुधरेगा। रेखा ने कहा कि हमारी कथनी और करनी एक सी होनी चाहिए। कार्यक्रम अध्यक्ष एवं वरिष्ठ सलाहकार शब्दम् मंजर उल वासै, अरविन्द तिवारी,

महिला सांस्कृतिक कार्यक्रम

राखी पूर्णिमा आयोजन

- **कार्यक्रम** : राखी पूर्णिमा आयोजन
- **दिनांक** : 17 अगस्त 2016
- **स्थान** : हिन्द लैम्प्स परिसर स्थित संस्कृति भवन

इस बार शब्दम् ने कुछ अनूठे ढंग से राखी के त्यौहार को मनाया। शब्दम् द्वारा संचलित सिलाई केन्द में बची हुई सामग्री से छात्रा–छात्राओं द्वारा जैविक राखी तैयार की गईं। शब्दम् संस्था की पूरी क्रियान्वन टीम एकत्रित हुई, राखी के गाने गाए और सभी बहनों ने पुरुष वर्ग को राखी बाँधते हुए प्रण लिया कि आगे भी हम एक जुट टीम प्रयास से कार्य करेंगे।

शब्दम् अध्यक्ष श्रीमती किरण बजाज ने अपने संदेश में कहा कि इस रक्षाबन्धन के त्यौहार पर जब बहन भाई के कलाई पर रक्षा सूत्र बांधती है तब वह भाई के जीवन में अमोघ शक्ति और आनन्द की अमिट छाप छोड़ती है। समझने की बात यह है कि यह रक्षा सूत्र एक दिन का नहीं है; यह जीवन भर का कवच है। भाइयों पर अपनी बहन की रक्षा का ही नहीं बल्कि पूरे समाज की बहनों की रक्षा का दायित्व होता है।

दो दिवसीय प्रशिक्षण में छात्राओं द्वारा तैयार की गई राखियां।

राखी पूर्णिमा के अवसर पर राखी बांधती बहने।

राखी पूर्णिमा में भाग लेने वाले गण्यमान्य।

समूह छायांकन

महिला सांस्कृतिक कार्यक्रम

कवयित्री सम्मेलन

- **कार्यक्रम** : कवयित्री सम्मेलन
- **दिनांक** : 6 मार्च 2016 **आमंत्रित कवयित्रियां** : डॉ. रुचि चतुर्वेदी, डॉ. ज्योत्स्ना शर्मा, डॉ. सुशीला 'शील'
- **स्थान** : हिन्द लैम्प्स परिसर स्थित संस्कृति भवन

बेटियां चिट्ठियां हैं, जो दिलों को जोड़ देती हैं,
ये तनी मुट्ठियां हैं, जो प्रलय को मोड़ देती हैं।
बेटियां वज्र भी और करुणा की कहानी भी,
शिलाओं पर अमिट इतिहास लिखकर छोड़ देती हैं।। ... डॉ. सुशीला 'शील'

महिला दिवस से प्रेरित, शब्दम् कवयित्री सम्मेलन में जब उपर्युक्त रचना ने बेटियों की आकृति को रेखांकित किया तो सभागार में उपस्थित चेहरे प्रश्नवाचक मौन की स्थिति में थे।

कार्यक्रम में नया प्रयोग करते हुए, मंच पर एक तरफ सुप्रसिद्ध मंचीय कवयित्रियाँ डॉ. सुशीला शील, डॉ. ज्योत्स्ना शर्मा, डॉ. रुचि चतुर्वेदी को आमंत्रित किया गया, वहीं विद्यालयों की उन छात्राओं को भी जगह दी गई जिनमें कविता का अंकुर प्रस्फुटित हो रहा है।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में भगवतीदेवी कन्या नगरपालिका महाविद्यालय की छात्रा शारदा द्विवेदी ने अपनी रचना ''बेटा नहीं हूँ, मैं बेटी हूँ, इस कारण यूं न सताओ मुझको, क्या गलती है मेरी बताओ मुझको, यूं कोख में मार न जाओ मुझको''

छात्रा देविका जौहरी ने ''मेरा हक न छीनो मेरे भइया, तो क्या हुआ, मैं नहीं कन्हैया, है

सभा का सम्बोधन एवं काव्यपाठ करतीं श्रीमती किरण बजाज।

बस यही अर्ज मेरी तुमसे, जीने दो मुझको मारो न मइया'', छात्रा प्रिया शर्मा ने ''हर एक साँस की होती है कीमत, तेरा जीवन किसी पर बोझ नहीं है, गैरों के डर से मरना क्या सही है, क्यों नारी के जीवन की सदा अग्नि परीक्षा रही है'', आदर्श कृष्ण महाविद्यालय की छात्रा हर्षिता गुप्ता ने ''दुनिया के वाणों से बचते चलो, जीवन की राहों पर हँसते चलो, यहीं पे जिंदा दिली की जरूरत है, हँसते चलो तुम हँसाते चलो'' प्रस्तुत कीं।

जयपुर से आयीं डॉ. सुशीला 'शील' अपनी रचना ''प्यार की प्यास तो प्यार से ही बुझे, चाहे वो मुझको लगे, या लगे वो तुझे। मैं नदी हूँ शिखर से उतर आयीं हूँ बन समन्दर गले से लगा ले मुझे....'' काव्य पाठ का गायन कर उपस्थित श्रोतागण को तालियां बजाने पर मजबूर कर दिया।

उन्होंने होली पर ''ब्रज की रज में कछु खोय गई, कछु खोई गई मैं कुंज कछारन में इति छाह में कदम्ब की मोहि गई, इति मोहि गली गलियारन में....'' श्रोताओं को होली के रंग में रंग दिया।

आगरा से आयीं डॉ. रुचि चतुर्वेदी ने रचना ''अब तक तो केवल भ्रम पाला था, आज मगर अनुबंध हो गया, युग बीता था, घट रीता था, आस न थी भर पाने की, केवल एक आस बाकी थी तन आकंठ डुबाने की'' से काव्य

काव्यपाठ करतीं कवयित्री डॉ. रुचि चतुर्वेदी।

काव्यपाठ करतीं कवयित्री डॉ. सुशीला 'शील'।

काव्यपाठ करतीं कवयित्री डॉ. ज्योत्स्ना शर्मा।

सभागार में उपस्थित श्रोतागण।

काव्यपाठ करतीं छात्राएं
शारदा द्विवेदी, देविका जौहरी एवं हर्षिता गुप्ता।

पाठ का प्रारम्भ किया।

कविता के माध्यम से सभागार को होली के रंगो में भिगोते हुए उन्होंने अपनी रचना ''होरी में हुराय रहे, चूनर भिजाएं रहे, श्याम–ग्वाल बाल सब डोल सिग गांव में, टेसुन सूं होद भरो, इत उत दौरि परे भाज रहे कान्हा, जुलझाए रहे गांव में'' कविता का पाठ कर उपस्थित श्रोताओं को दाद देने पर मजबूर कर दिया।

आगरा से पधारीं डॉ. ज्योत्सना शर्मा ने अपनी रचना ''बादलों में रही बादलों की तरह, तुमने धारण किया मैं नदी हो गई, बादलों में रही........... शब्द ढाँचे में ढलती रही उम्र भर, तुमने गाया सनम मैं ग़ज़ल हो गई' रचना की धुन पर श्रोता भी गुनगुनाते रहे।

कार्यक्रम अध्यक्ष श्रीमती किरण बजाज ने अपने सम्बोधन में कहा 'जब तक बेटियों को जन्म सिद्ध अधिकार और समान अवसर नहीं मिलेंगे, तब तक बेटियाँ परिवार पर बोझ रहेंगी, यह समाज की बहुत बड़ी विकृति है। हमें बेटी को अवसर और पैत्रिक अधिकार बेटों के समान उपलब्ध कराने होंगे। जब तक समाज अपने अन्दर इस तरह का बदलाव नहीं करेगा तब तक बेटी पैदा होने से पहले ही मारी जाती रहेगी। जब तक इन मूल समस्याओं का समाधान नहीं होगा तब तक यह समस्या यथा स्थिति में बनी रहेगी। उन्होंने अपनी कविता की पंक्तियां प्रस्तुत कीं:

उनके कहने से हम अपनी हँसी न छीनेंगे, न अपने गम का हिसाब उनसे पूछेंगे। न जायेंगे उनके तटपर, न हाथ बढ़ायेंगे। अपनी नैया हम खुद डूबने से बचायेंगे। हमारे सपनों का दीपक हम खुद ही जलायेंगे। उनसे जगमग महल से, कोई दीप नहीं लायेंगे।

कार्यक्रम का कुशल संचालन करते हुए शब्दम् सलाहकार समिति के सदस्य एवं वरिष्ठ कवि डॉ. ध्रुवेन्द्र भदौरिया ने निम्न दोहों के माध्यम से बेटियों की स्थिति को दर्शाया।

''कन्याओं का वध करें, जो विकसित विज्ञान।

उससे अच्छा सौ गुना, पिछड़ापन अज्ञान।।''

''शास्त्र सभी समझा रहे, सीख दे रहे सन्त।

बिन दहेज की शकुन को, ले न रहा दुष्यन्त।।''

समूह छायांकन।

“

जन्म देने वालों से अच्छी शिक्षा देने वालों को
अधिक सम्मान दिया जाना चाहिए
क्योंकि उन्होंने तो बस जन्म दिया है, पर उन्होंने जीना सिखाया है।

- अरस्तू

”

डॉ. ज्योत्स्ना शर्मा । प्रवक्ता (हिन्दी विभाग) । आर.बी.एस. कॉलेज, आगरा

एम.ए. – संस्कृत, एम.ए.– हिन्दी, पीएच.डी.

''लक्ष्मी नारायण मिश्र के नाटकों में युग चेतना'', गीत संग्रह – शीघ्र प्रकाश्य; विभिन्न पत्र – पत्रिकाओं में आलेख एवं रचनाएं प्रकाशित । **सम्प्रति** - 'सहयात्रा' साहित्यिक सांस्कृतिक सामाजिक सरोकारों को समर्पित संस्था– कार्यकारिणी सदस्य। 'आराधना' – सामाजिक संस्था की सक्रिय सदस्य। आकाशवाणी से निरन्तर वार्ता, गीतों एवं कविताओं का प्रसारण। विविध राष्ट्रीय कवि सम्मेलनों में सहभागिता।

''चलो इन्सां बन जायें''

डोर जब टूटे साँसों की, तिनके का सहारा बहुत होता है। चलो तिनका बिन जायें
खुदा तो बन ना पाये, चलो इन्सां बन जायें।
रात जब गहरी काली हो, दीये का सहारा बहुत होता है, चलो दीया बन जायें
चाँद जो बन ना पाये, एक तारा बन जायें।
धूप जब फैली हो चहुँ ओर, छाया का सहारा बहुत होता है। चलो छाया बन जायें
बाग जो बन ना पाये, एक पौधा बन जायें।
भूख से अकुलाती आँतें, टुकड़े का सहारा बहुत होता है। चलो टुकड़ा बन जायें
पेट जो भर ना पाये, कोई उम्मीद जगायें।
सर्द जब रिश्ते हो जायें, गैरों का सहारा बहुत होता है। चलो रिश्ता बन जायें
दोस्त गर बन ना पायें, कोई तो फर्ज निभायें।
राह जब बिल्कुल हो अनजान, आँखों का इशारा बहुत होता है। चलो आँखें बन जायें
साथ जो चल ना पायें नयन से साथ निभायें।
आँच जब अस्मत पर आये आँचल का सहारा बहुत होता है। चलो आँचल बन जाये
कृष्ण तो बन ना पाये, प्रीत की रीत निभायें।
देश पर संकट हो भारी, वीरों का सहारा बहुत होता है। चलो वीरों को सराहें
वीर जो बन ना पाये, गीत वीरों के गायें।
कहा मैंने भी बहुत है, सुना तुमने भी बहुत है।
कहानी खत्म करें अब, चलो कुछ करके दिखायें
कहानी खत्म करें अब, चलो कुछ करके दिखायें।

-डॉ. ज्योत्स्ना शर्मा

डॉ0 रुचि चतुर्वेदी । असिस्टेंट प्रोफेसर, FET– आगरा कॉलेज, आगरा Email -ruchiaec3@gmail.com । पता :1049/4R, आवास विकास कॉलोनी, बोदला, आगरा । **प्रकाशन** – विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में लेख एवं कविताओं का प्रकाशन एवं साक्षात्कार। **प्रसारण** – विभिन्न रेडियो स्टेशनों एवं दूरदर्शन से प्रसारण।

सम्मान – 'युवा कवयत्री सम्मान' (चर्वणा समिति, आगरा), 'भगिनी निवेदिता सम्मान' (राष्ट्र सेविका समिति, आगरा), 'युवा रचनाकार सम्मान' (नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, आगरा), 'कवयित्री सम्मान' (आर्य समाज, आगरा), 'युवा प्रतिभा सम्मान' (हिन्दी सभा, आगरा), 'साहित्य श्री सम्मान' (कायाकल्प फाउण्डेशन, नोएडा), 'शब्द कोकिला सम्मान' (साहित्य परिवार, बैंगलोर), 'हिन्दी शब्द सम्मान' (पुरदिल नगर), 'हिन्दी सेवा सम्मान' बेहाला पुस्तक मेला, कोलकता (प0 बं0), 'प्रज्ञा श्री अलंकरण' (वर्तिका, जबलपुर), 'हिन्दी प्रतिभा सम्मान' (उत्तर प्रदेश साहित्य सम्मेलन व उत्कर्ष अकादमी, कानपुर) 'साहित्य श्री सम्मान' भारतेन्दु समिति, (कोटा), 'युवा प्रतिभा सम्मान' राष्ट्रभाषा स्वाभिमान न्यास 19वॉं अखिल भारतीय साहित्य सम्मेलन, आगरा, 'विशिष्ट हिन्दी सेवा सम्मान' जे0एम0डी0 पब्लिकेशन, दिल्ली। **पुरस्कार** – प्रतिमा रक्षा सम्मान समिति, करनाल (हरियाणा) द्वारा ग्रेट आइकॉन ऑफ इण्डिया अवार्ड, IPERA पटना द्वारा ''बेस्ट स्टिस्टिसियन'' अवार्ड, ISGBRD द्वारा वनस्थली विद्यापीठ में आयोजित संगोष्ठी में ''प्रेसीडेंशियल अवार्ड'', World Science Congress द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में 'Science Flame' अवार्ड।

गंगा का पावन जल बेटी,
यमुना की धार विरल बेटी।
आँगन की फुलवारी भी है।
ममता का मूल सकल बेटी।।

आकाश विचरने वाली वह,
थी उड़नपरी मतवाली वह।
ले उड़ा चली अंतरिक्ष यान,
था मिला नहीं नामो निशान।

दुर्गा गौरी का बल बेटी,
है जग जननी भूतल बेटी।
आँगन की फुलवारी भी है,
ममता का मूल सकल बेटी।।

तुम ताम्रपत्र पर लिखा नाम
प्रिय नेहवाल तुमको सलाम।
सप्तम् की स्वर साधिका तुम्हीं,
हे लता गायिकी को प्रणाम।

मन का संगीत नवल बेटी,
है पावन पतित सरल बेटी।
आँगन की फुलवारी भी है,
ममता का मूल सकल बेटी।।

बेटियाँ सृष्टि का स्वाद सरस,
बेटियाँ दृष्टि का धवल परस।
जीवन का आदि अंत तुम्हीं,
हो पारसमणि तुम सुखद परस।।

है लहर लहर चंचल बेटी,
नदियों की तरह निश्छल बेटी।
आँगन की फुलवारी भी है,
ममता का मूल सकल बेटी।।

–डॉ0 रुचि चतुर्वेदी

डॉ. सुशीला 'शील'

30 वर्षों से विभिन्न विधाओं–कविता, कहानी, लघुकथा, नाटक, ग़ज़ल इत्यादि में लेखन । **प्रकाशन** - 1989 से कवि सम्मेलनों, रेडियो, दूरदर्शन आदि पर काव्य पाठ

सम्प्रति - राजस्थान महाविद्यालय, जयपुर में प्रवक्ता

रूचि - पढ़ना, लिखना और समाज सेवा

दहकते अंगारों जैसा,
है जीवन बंजारों जैसा,
भटकते यूँ ही बीत गया।
भरा हुआ घट पता नहीं,
कब कैसे रीत गया,
हाथ खाली–खाली। हाथ खाली–खाली।।

जब–जब अमृत चाहत ने
जीवन सागर मथ डाला
तब–तब और दाहक बन
निकली विष की ज्वाला।
झुलसते जीवन बीत गया।।

अनुबंधों के संबंधों का
लगा हुआ था मेला
गहराई में जाकर देखा
मन था निपट अकेला
तरसते जीवन बीत गया।।

मरुथल–मरुथल रही भटकती
मृगतृष्णा थी मन में
रहा भागता कंचनमृग के
पीछे मन वन–वन में
उलझते जीवन बीत गया।।

धरा मिली अंबर से
खुशबू मिलगई मस्त पवन से
पर मैं जितना बढ़ी
खड़ी थी उतनी दूर सजन से
तड़पते जीवन बीत गया।।
भरा हुआ घट पता नहीं
कब कैसे रीत गया।।

-डॉ. सुशीला 'शील'

महिला सांस्कृतिक कार्यक्रम

प्रेरणास्रोत, जानकीदेवी बजाज जयन्ती समारोह

- **कार्यक्रम** : प्रेरणास्रोत, जानकीदेवी बजाज जयन्ती समारोह
- **दिनांक** : 7 जनवरी 2016
- **स्थान** : हिन्द लैम्प्स परिसर स्थित संस्कृति भवन

''एक ज़िन्दा क्रांति थीं – श्रीमती जानकीदेवी बजाज''

आज से 100 वर्ष पूर्व जब समाज रूढ़िवादिता से जकड़ा हुआ था, तब एक महिला द्वारा परदा छोड़ाना, एक महान क्रांति की बात थी। जब समाज जातिवाद की कुरीतियों में लिप्त था, तब एक महिला का वर्धा मंदिर में दलितों के प्रवेश के लिए आवाज़ उठाना एक और महान क्रांति की बात थी। जिस समाज में स्वर्णाभूषण लक्ष्मी या सम्पन्नता का प्रतीक माने जाते थे, तब एक महिला का देश के लिए स्वर्णाभूषणों का त्याग एक महान क्रांति ही तो था। जिस समाज में महिलाएँ घर में भी सीमित दायरों में रहती थीं, उसमें एक महिला का घर–घर जाकर देश हित में चरखा सिखाना एक महान क्रांति थी। जिस समाज में मृत्यु के पश्चात् अस्थियों का गंगा में विसर्जन करना आत्मा की मुक्ति का मार्ग माना जाता था, उसमें एक महिला का जल प्रदूषण को रोकने के लिए अस्थियों को किसी वृक्ष की मिट्टी में मिला देना एक महान क्रांति का ही द्योतक था।

उपर्युक्त विचारों को जब सभागार में मुख्यवक्ता श्री मंज़र–उल वासै एवं श्री एस. के. शर्मा द्वारा रखा गया तो उपस्थित कई लोग, यह सोचने को विवश थे कि आखिर इतिहास ने जानकीदेवी बजाज को अपने पन्नों में जगह क्यों नहीं दी।

सभागार में उपस्थित जन समूह

मुख्य वक्ता श्री श्याम कृष्ण शर्मा'

कार्यक्रम का प्रारम्भ ''ओम् नमो नारायणा '' एवं ''पायो जी मैंने राम–रतन धन पायो'' भजन के साथ हुआ जिससे सभागार पूरी तरह जानकीदेवी बजाज के भक्तिरस में डूब गया। तदुपरान्त जानकी देवी बजाज का जीवन परिचय सुश्री रेखा शर्मा ने प्रस्तुत किया। जानकीदेवी बजाज के जीवन पर आधारित दृश्य–श्रव्य दिखाया गया, जो सभागार में उपस्थित समूह को उनके जीवन से जोड़ने में कारगर रहा।

मुख्य वक्ता श्री मंज़र–उल वासै ने जानकीदेवी बजाज के जीवन के गोसेवा एवं समाज सेवा पक्ष को रखते हुए बताया कि वह आजीवन गोसेवा संघ की अध्यक्ष रहीं। उन्होंने एक प्रसंग का ज़िक्र करते हुए बताया कि जब जानकीदेवी महज़ चार वर्ष की थीं उन्हें चेचक निकली; उस समय की मान्यता अनुसार उन्हें एक ऐसी जगह रखा गया जहाँ

मुख्य वक्ता श्री मंजर–उल वासै'

गाय बँधा करती थी और वहीं गोबर एवं मूत्र का विसर्जन करती थी। कहा जाता है कि गाय के गोबर और मूत्र की मिश्रित गंध से ऐसा वातावरण तैयार होता है जिससे चेचक जैसी बीमारी दूर हो जाती है और ऐसा हुआ भी। श्रीमती जानकीदेवी बजाज का गो प्रेम तभी से जागृत हुआ।

श्री एस.के. शर्मा ने जानकीदेवी बजाज के

समूह छायांकन

राष्ट्रीयता के पक्ष को रखते हुए बताया कि जानकी देवी बजाज के जीवन का हर दिन, राष्ट्र प्रेम की कहानी कहता है। उनके जीवन पर गांधीजी, विनोबा और जमनालालजी का प्रभाव पड़ा। जब बात विदेशी कपड़ों के बहिष्कार की आयी तो जानकीजी ने आगे बढ़ते हुए न सिर्फ़ अपने घर के सभी विदेशी वस्त्रों की होली जलाई बल्कि अन्य लोगों को भी विदेशी वस्त्र त्यागने के लिए प्रेरित किया।

कार्यक्रम अध्यक्ष श्री उमाशंकर शर्मा ने सभा में उपस्थित युवा वर्ग से कहा कि जानकीदेवी बजाज का पूरा जीवन तपस्या, नियम का रहा है। यदि उनको समझकर उनके कुछ या कम से कम एक गुण भी अपनाया तो यह आज के कार्यक्रम की सफलता होगी और हमारी उस महान देवी को सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

क जिंदा क्रांति थीं जानकी देवी बजाज

जानकी देवी बजाज के चित्र पर माल्यार्पण करते हुए अतिथि।

यो जी मैने राम रतन धन पायो में डूबा हिन्द परिसर

कार्यक्रम में श्री निर्दोष 'प्रेमी' ने अपने अंदाज में जानकीदेवी बजाज द्वारा लिखित निम्न कविता सुनाई ।

हे परम सृष्टि–करतार,
मानूं मैं तेरा उपकार!

दिया पति मुझको अपन समान
दिये सब साधन औ' सब साज
धाम , धन, बुद्धि, कुटुम्ब, समाज
कमी क्यों दया–धरम की की ?

बनाओ मेरा ह्रदय उदार,
हे, परम सृष्टि–करतार।।

रूप बिन खूब बचाई जी
रूप बिन खूब सम्भाली जी
मिलता जो यदि रूप तो मैं
आकाश में उड़ती जी

किया तुमने मेरा उपकार,
हे परम सृष्टि–करतार।।

संगति गांधी अलबेले की
लाज बचाई इस मेले की
अन्त में की कैसी खिलवार
बताओ दुनिया के रचनार।
हे परम सृष्टि–करतार।

लगाई तुमने दारुण चोट
दूर करने को मेरी खोट
जगाने को अथवा हे देव,
छुड़ाने को ममता की देव ?

तुम्हारी माया अपरम्पार,
हे परम सृष्टि–करतार।
मानूं मैं तेरा उपकार।।

कार्यक्रम में शब्दम पदाधिकारियों के साथ मौजूद अतिथिगण।

हे परम सृष्टि– करतार, मानूं मैं तेरा उपकार...

जानकी देवी की जयंती मना

स्पिक मैके, जमनालाल बजाज फाउण्डेशन एवं शब्दम् द्वारा कार्यक्रम

'शास्त्रीय विद्याएं', आज भी यह शब्द ब्रजभूमि क्षेत्र के ग्रामीण अंचल में पढ़ने वाले छात्र–छात्राओं से बहुत दूर है। स्पिक मैके चेप्टर शिकोहाबाद, शब्दम् एवं जमनालाल बजाज फाउण्डेशन ने जब ग्रामीण विद्यालयों में इस शास्त्रीय विद्या के अंतर्गत संगीत, नृत्य, वादन इत्यादि कार्यशालाओं के आयोजन के संदर्भ में वार्ता की तो प्रथमा दृष्ट्या विद्यालयों ने उत्साह नहीं दिखाया। टीम के सदस्यों ने पिछले कार्यक्रमों की फोटो एवं रिपोर्ट दिखाकर विद्यालयों को शास्त्रीय विद्याओं पर आधारित कार्यक्रम कराने के लिए प्रेरित किया।

इन कार्यशालाओं के लिए प्रारम्भ में बच्चों में भी उत्साह नहीं था परन्तु जैसे ही कार्यशाला प्रारम्भ होती बच्चे सुर, राग, ताल, ठुमरी इत्यादि में स्वयं को इस प्रकार डुबो लेते जैसे वे वर्षों से इस संगीत को सुनते आ रहे हों। कार्यशाला के अंत में छात्र–छात्राएं, आये हुए कलाकार का ऑटोग्राफ लेने के लिए लाइन में लग जाते थे व उनके साथ अपनी याद के लिए फोटो खिचाने के लिए निवेदन करते थे। लगभग सभी स्कूलों के प्रबन्धक वर्ग ने इस प्रकार की कार्यशालाओं को और आयोजित कराने के लिए संस्था से निवेदन किया।

यह एक अलग प्रकार का अनुभव था कि जिस कार्यक्रमो को कराने के लिए विद्यालय या बच्चों में कोई उत्साह नहीं था, उसी कार्यक्रम के आनंद में बच्चे पूरी तरह रम गये। इस वर्ष टीम ने शास्त्रीय विद्याओं की अलग–अलग श्रेणियों के कुल 7 कलाकारों द्वारा 52 विद्यालयों में लगभग 22 हजार 5 सौ विद्यार्थियों के मध्य कार्यशाला का आयोजन किया।

स्पिक मैके चेप्टर शिकोहाबाद, जमनालाल बजाज फाउण्डेशन एवं शब्दम् द्वारा अलग–अलग विद्यालयों में किए कार्यक्रमों का विवरण।

आमंत्रित कलाकार – श्री अमजद अली खान एवं सहयोगी कलाकार ज़हीन ख़ान (तबला) एंव आरिफ़ ख़ान (हारमोनियम)

कार्यक्रम– हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत एवं कार्यशाला | दिनांक– 11 अप्रैल से 13 अप्रैल 2016

स्थान– 1. एस.डी.एस. हायर सेकेण्डरी स्कूल ग्राम खोड, होलीपुर 2.शान्ति निकेतन स्कूल, पिनाहट, 3. जी. डी.एम. इण्टर कॉलेज, ग्राम बिजकौली 4.बाह पब्लिक स्कूल, बाह 5. जनता आदर्श इण्टर कॉलेज, चिरहुली 6. दिल्ली पब्लिक स्कूल, शिकोहाबाद 7. हिन्द परिसर स्थित संस्कृति भवन, शिकोहाबाद

कलाकार परिचय | अमजद अली खान

अमजद अली खान हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के उभरते वोकल कलाकार हैं। इनका जन्म किराना घराना के प्रसिद्ध संगीतकारों के परिवार में हुआ है। अमजद अली खान ऑल इण्डिया रेडियो तथा दिल्ली दूरदर्शन के ए ग्रेड के कलाकारों की श्रेणी में आते हैं। वह टीवी सीरियल में पार्श्व गायन के रूप में अहम भूमिका निभायी है। विदेशों में भी जैसे चाइना एशिया महोत्सव 2004, नमस्ते इण्डिया जापान, वीना म्यूजिकल फेस्टीवल स्विटज़रलेण्ड़, ओलम्पिक सैरीमनी लन्दन में अपने प्रोग्राम से ख्याति प्राप्त की है।

बहुत सारे प्रख्यात कवियों जैसे रवीन्द्र नाथ टैगोर, मिर्ज़ा ग़ालिब, रसखान एवं अमीर ख़ुसरो की कविताओं के लिए संगीत कम्पोज़ किया है। इन्होंने अपने कैरियर को बहुत सारे अवार्ड जैसे – भारतरत्न पण्डित भीमसेन जोशी नेशनल अवार्ड, बेस्ट वोकल अवार्ड, झंकार म्यूजिक अवार्ड, सुरों के सिलसिले, हरिवल्लभ एंव काका साहिब म्यूजिक अवार्ड के अलावा अन्य कई अवार्डों से सुशोभित किया है।

संगीत के बारे में छात्रों को दी जानकारी

'संगीत की शास्त्रीय धारा ही जीवंत है'

अमजद अली खान ने विद्यार्थियों को किया संगीत के रस में सराबोर

रंग सारी गुलाबी चुनरिया रे...

गायक अमजद अली खान ने शास्त्रीय संगीत से सभी को रिझाया

शब्दम संस्था ने किया शास्त्रीय संगीत का आयोजन

शांति निकेतन पब्लिक स्कूल के बच्चों ने लिया संगीत समारोह का आनन्द

आमंत्रित कलाकार – दक्षिणा वैद्यनाथन एवं देवोस्मिता ठाकुर

कार्यक्रम– भारतीय शास्त्रीय (भरतनाट्यम्) नृत्य प्रदर्शन एवं कार्यशाला

दिनांक– 04 मई 2016 से 6 मई 2016

स्थान– विद्यालय शिकोहाबाद–1.पुरातन सरस्वती विद्यामन्दिर 2.पालीवाल विद्या निकेतन 3.राज कॉन्वेन्ट स्कूल, सिरसागंज–4. ब्राइट स्कॉलर्स एकेडमी 5. क्षेत्रीय इण्टर कॉलेज 6. देवशरण विद्या निकेतन, 7. हिन्द परिसर, शिकोहाबाद

कलाकार परिचय । दक्षिणा वैद्यनाथन

दक्षिणा वैद्यनाथन भरतनाट्यम् के एक प्रख्यात परिवार से आती हैं। उन्होंने अपनी माता की गुरु डॉ. सरोजा वैद्यनाथन (पद्मभूषण पुरस्कार से सम्मानित) और अपनी मां रमा वैद्यनाथन के संरक्षण के तहत अपने ही घर में गणेश नाट्यालय से श्रम साध्य प्रशिक्षण प्राप्त किया है।

आपको 2003 एवं 2014 में भारत सरकार के संस्कृति विभाग द्वारा सीसीआरटी छात्रवृत्ति से सम्मानित किया गया। 2005 में 'यंग एचीवर्स' श्रेणी में 'कल्पना चावला अवार्ड,' 2015 में OYSS द्वारा 'निर्भया पुरस्कार', और भारतीय शास्त्रीय नृत्य में योगदान के लिए ट्रिनिटी आर्ट्स चेन्नई द्वारा 'नाट्य रत्न' से विभूषित किया गया। आप इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय से भरतनाट्यम में डिप्लोमा धारक और प्रौद्योगिकी के वेल्लोर इंस्टीट्यूट आफ टेक्नालोजी' वेल्लोर से इलेक्ट्रानिक्स एवं संचार में स्नातक है।

दक्षिना वैद्यनाथन ने भरतनाट्यम की दी प्रस्तुति

नृत्य के जादू से हुए मंत्र मुग्ध

दक्षिणा ने दी शिव तांडव नृत्य की प्रस्तुति

बच्चों का संस्कृति से जुड़ाव बेहद जरूरी

नृत्यांगना दक्षिणा ने दीं प्रस्तुतियां

शिकोहाबाद। हिन्द लैम्प्स के तत्वावधान में नृत्यांगना दक्षिणा वैद्यनाथन एवं उसके साथियों ने नगर और सिरसागंज में विभिन्न स्थानों पर प्रस्तुतियां दीं। दक्षिणा वैद्यनाथन ने शिवजी के अर्द्धनारीश्वर के स्वरूप में तांडव नृत्य का प्रदर्शन किया। उन्होंने महाभारत के द्रोपती चीर हरण और भगवान श्रीकृष्ण की बाल लीला को अपने नृत्य के माध्यम से प्रस्तुत किया। सिरसागंज व शिकोहाबाद क्षेत्र के विभिन्न विद्यालयों में भरतनाट्य नृत्य एवं कार्यशाला से लगभग 5 हजार छात्र छात्राएं लाभान्वित हुए। इस अवसर पर राजकिशोर यादव, मंगेश पाटिल, अन्नत पुरन्दरे, सिद्धेश गोखले, कर्नल वीएस यादव, जेपी पाठक उपस्थित रहे। चेप्टर के वाइस चेयरमैन एसके शर्मा द्वारा कलाकारों का परिचय दिया। संचालन मनोज कुलश्रेष्ठ ने किया।

शिकोहाबाद के स्कूलों में शुक्रवार को भरतनाट्यम कार्यक्रम प्रस्तुत करती दक्षिणा वैद्यनाथन व उनके साथी कलाकार। • हिन्दुस्तान

आंमत्रित कलाकार– दीप्ति गुप्ता

कार्यक्रम– कथक प्रदर्शन एवं कार्यशाला | दिनांक– 8 अगस्त से 10 अगस्त 2016

स्थान – 1. कस्तूरबा गाँधी विद्यालय भैसराऊ छुटमलपुर सहारनपुर। 2. कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय तिपाया पूर्वारका सहारनपुर। 3. प्राथमिक विद्यालय कुमारहेडा सरसावा, सहारनपुर। 4. प्राथमिक विद्यालय अलीपुर सरसावा, सहारनपुर। 5. गौड फील्ड पब्लिक स्कूल पुष्पांजली विहार जनता रोड, सहारनपुर। 6. प्राथमिक विद्यालय भूलनी मुजफराबाद, सहारनपुर।

कलाकार परिचय। दीप्ती गुप्ता

दीप्ती गुप्ता का जन्म 16 नवम्बर 1992 में ऐत्मादपुर जिला आगरा में हुआ। बचपन से ही नृत्य में उनकी रूचि थी यह प्रतिभा उनके माता–पिता ने देखी एवं एत्मादपुर में ही कलावती संगीत कला निकेतन में हो रहे नृत्य के प्रशिक्षण में उन्हें प्रवेश दिला दिया। उनके गुरु श्री धीरेन्द्र तिवारी रहे जिन्होंने उनकी प्रतिभा को निखारा एवं उन्हें दिल्ली के कथक केन्द्र में सीखने की सलाह दी एवं मार्गदर्शन प्रदान किया।

दीप्ती की शिक्षा फिरोजाबाद के किड्स कार्नर स्कूल से पूर्ण हुई थी। दीप्ती गुप्ता की कला निखारने में प्रबंधक श्री मयंक भटनागर का बड़ा सहयोग रहा। दीप्ती गुप्ता ने कथक विषय में एम.ए. पूर्ण किया है। वर्तमान में दीप्ती गुप्ता ने दिल्ली में संगीत विद्यालय आरम्भ किया है।

''त्रयम डांस एकेडमी'' जिसके अंतर्गत कई विद्यार्थी संगीत की शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं दीप्ती ने दिल्ली आने के बाद उन्होंने कथक का पूर्ण ज्ञान सुविख्यात गुरू पंडित राजेन्द्र गंगानी जी के सानिध्य में प्राप्त किया।

जयपुर घराने की कथक शैली को समझाया

सहारनपुर (ब्यूरो)। गॉड फील्ड स्कूल में स्पिक मैके एवं शब्दम संस्था के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित कार्यशाला में प्रख्यात कथक नृत्यांगना दीप्ति गुप्ता ने अपनी प्रस्तुतियों से सभी की वाहवाही लूटी।

बुधवार को पुष्पांजलि विहार स्थित स्कूल में आयोजित कार्यक्रम का शुभारंभ प्रधानाचार्य इंदु आर्य और दीप्ति गुप्ता ने किया। कार्यक्रम में स्पिक मैके की ओर से आई मिस दीप्ति गुप्ता ने बच्चों को कथक की दमदार प्रस्तुति से उसकी बारीकियों को बताया। उन्होंने तत्कार सिखाकर कथक के जयपुर घराने की कथ शैली को समझाया।

स्पिक मैके समन्वयक शिफा मल्होत्रा और शब्दम के दुर्गासिंह कार्यक्रम पर विस्तार से प्र डाला। अनुष्का रोहतान, रिया य का सहयोग रहा। मोहित विशाल यादव, विभोर मित्तल, विजय, मनीषा, प्रतिभा, ज्योति संध्या, मीनाक्षी, रितु, वैशाली, आयशा, अर्चिता, मोनिका, शिमोना, योगिता, ज्योति, तरु प्रियंका, शशि मौजूद रहे। प्रीति और खुशी ने किया।

पुष्पांजलि विहार स्थित गॉड फील्ड स्कूल में नृत्यांगना दिप्ती गुप्ता को सम्मानित करती प्रधानाचार्य इंदु आर्या और अन्य शिक्षक।

कार्यशाला प्रदर्शन का शुभारंभ

सहारनपुर। स्पिक मैके की ग्रामीण क्षेत्र की श्रृंखला कार्यशाला प्रदर्शन का शुभारंभ कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय भैसराव, मुजफ्फराबाद से किया। दीप्ति गुप्ता ने कथक नृत्य से सभी को आनंद विभोर किया। समन्वयक पंकज मल्होत्रा ने बताया कि इस बार की इस श्रृंखला में कार्यक्रम शब्दम एवं स्पिक मैके के संयुक्त तत्वावधान में किया जा रहा है। इस अवसर पर वार्डन ललिता देवी ने कलाकारों का आभार जताया।

आमंत्रित कलाकार– गायिका रूपम सरकार एवं सहयोगी कलाकार सुकान्त वाजपेयी की प्रस्तुति

कार्यक्रम– शास्त्रीय संगीत प्रदर्शन एवं कार्यशाला । दिनांक– 11 अगस्त से 13 अगस्त 2016

स्थान– 1. प्राथमिक विद्यालय नं0 4 रामपुरमनि, सहारनपुर। 2. पूर्व माध्यमिक विद्यालय कल्लरपुर(राजपूत) रामपुर, सहारनपुर। 3. राजकीय आश्रम पद्धति बालिका इण्टर कॉलेज पुवारका, सहारनपुर। 4. पूर्व माध्यमिक विद्यालय मुसैल विकास क्षेत्र–मुजफराबाद, सहारनपुर। 5. राजकीय आश्रम पद्धति बालिका इण्टर कॉलेज जौला डिडौली नागल, सहारनपुर। 6. नेशनल मॉडल इण्टर कॉलेज नागल, सहारनपुर।

कलाकार परिचय। **रूपम सरकार**

रूपान सरकार सामन्ता आई.सी.सी.आर. के कलाकारों के पैनल में 2005 से एवं स्पिक मैके पैनल में 2001 से सम्मिलित हैं। वो ऑल इण्डिया रेडियो दिल्ली में ए हाई ग्रेड़ आर्टिस्ट के रूप में सम्मिलित हैं।

रूपान सरकार सामन्ता ने एम.ए. वोकल म्यूजिक से पास करने के उपरान्त उन्होंने वर्ष 1994 में बंगाल चेम्पियनशिप गायन जीती और सन् 1997 में गोल्डन टेलेंट में प्रथम स्थान प्राप्त किया जो कि पं. रवि किचलू फाउण्डेशन द्वारा सम्मानित किया जाता है।

आपने श्रीमती गिरजा देवी की संगत में काफी संगीत समारोह में भाग लिया जिसमें दिल्ली, जयपुर, अहमदाबाद, कोलकाता, बनारस आदि भारत के अन्य जगहों पर अपने प्रोग्राम दिये। इन्होंने भारत के अलावा विदेशों में भी अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया है जिसमें मुख्यरूप से फ्रांस रेडियो, लंदन, पैरिस, स्विटजरलेण्ड़, आदि में अपनी प्रस्तुति दे चुकी हैं।

शास्त्रीय गायन की प्रस्तुतियों से किया मंत्रमुग्ध

सहारनपुर : स्पिक मैके की श्रृंखला कार्यशाला प्रदर्शन के दौरान प्राथमिक विद्यालयों में भारतीय शास्त्रीय गायन की प्रस्तुतियों से मंत्रमुग्ध कर दिया। प्राथमिक विद्यालय रामपुर मनिहारान व पूर्व माध्यमिक विद्यालय कल्लरपुर में स्पिक मैके व संस्था शब्दम के संयुक्त तत्वावधान में रूपन सरकार ने प्रथम प्रस्तुति में राग भैरव में गुरू वंदना गाई।

विशेष गायन शैली होली रंग डारूंगी एवं घिर-घिर आई कजरी को खूब पसंद किया गया। तबले पर संगत सुकांता वाजपेयी ने दी। समन्वयक पंकज मल्होत्रा, दिनेश वर्मा, तुषार रोहतान, कार्तिक सैनी, प्रधानाचार्य शशिबाला, संजय कुमार, मीनाक्षी, प्रवीण चौहान, अर्चना त्यागी,

पूर्व माध्यमिक विद्यालय कल्लीपुर में प्रस्तुति देती प्रख्यात गायिका रूपान सरकार।

आमंत्रित कलाकार– लिप्सा दास की प्रस्तुति

कार्यक्रम– ओडिसी नृत्य प्रदर्शन एवं कार्यशाला | दिनांक– 29 अगस्त से 2 सितम्बर 2016

स्थान– 1. इण्टर कॉलेज डंडियामई। 2. आर्य जनता इण्टर कॉलेज पैगू। 3. एम.डी.जैन इण्टर कॉलेज, सिरसागंज। 4. गिरधारी इण्टर कॉलेज, सिरसागंज। 5. चौ0 लालसिंह इण्टर कॉलेज खटुआमई। 6. राजकीय इण्टर कॉलेज नसीरपुर। 7. दाऊदयाल गर्ल्स इण्टर कॉलेज फिरोजाबाद। 8. डी.ए.वी इण्टर कॉलेज, फिरोजाबाद। 9. एमजी गर्ल्स इण्टर कॉलेज फिरोजाबाद। 10. कस्तूरबा इण्टर कॉलेज फिरोजाबाद। 11. हिन्द परिसर स्थित संस्कृति भवन, शिकोहाबाद।

कलाकार परिचय। लिप्सा दास

लिप्सा दास ने ओडिसी नृत्य में करीब पिछले 25 वर्ष से पूर्ण समर्पण भाव से अपने प्रतिभाशाली गुरु पद्मश्री श्री गंगाधर प्रधान के नृत्य निर्देशन में इस शास्त्रीय नृत्य की ऊँचाइयों को छुआ है एवम् अपने नृत्य से देश एवं विदेशों के लोगों को बहुत प्रभावित किया है।

आपने कई अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त किये जिसमें सिंगारमनी, सुरसिंगार संसद मुम्बई द्वारा और वरिष्ठ राष्ट्रीय छात्रवृत्ति जो भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय द्वारा प्रदान की गई है। मलेशिया विश्वविद्यालय द्वारा इण्टरनेशनल एम्बेसडर ऑफ आर्ट्स की उपाधि से सम्मानित किया गया।

देश के लगभग प्रत्येक राज्य में आपने ओडिसी नृत्य की प्रस्तुति दी है। विदेशों में भी आपने भारतीय शास्त्रीय कला को कई देशों में पहुंचाने का कार्य किया है जिनमें प्रमुख हैं दुबई, कनाडा, उत्तर कोरिया, अमेरिका, इडोनेशिया, थाइलेण्ड, जापान, वियतनाम, रोमानिया।

लिप्सा ने दिए नृत्य के टिप्स

शब्दम और स्पिक मैके ने विद्यालयों में कराया ओडिसी नृत्य

लिप्सा दास ने बच्चों को सिखाये नृत्य के गुण

लिप्सा ने बच्चों को सिखाए नृत्य

लिप्सा दास ने बच्चों को सिखाए नृत्य के तरीके

हिंद लैंप्स व विभिन्न स्कूलों में दी प्रस्तुति

आमंत्रित कलाकार– गायिका रनिता डे

कार्यक्रम– शास्त्रीय संगीत प्रदर्शन एवं कार्यशाला | दिनांक– 17 अक्टूबर से 18 अक्टूबर 2016

सीान– 1. एस.आर.एस.मैमोरियल पब्लिक स्कूल, शिकोहाबाद। 2. नीलकण्ठ एकेडमी, दाताराम टाउन, स्वामी नगर शिकोहाबाद। 3. इन्दिरा मैमोरियल पब्लिक स्कूल, सिरसागंज। 4. लॉर्ड कृष्णा पब्लिक स्कूल, स्टेशन रोड, शिकोहाबाद।

कलाकार परिचय। रनिता डे

रनिता डे को संस्कृति मंत्रालय द्वारा 2009–10 में राष्ट्रीय विद्वान विजेता के रूप में चुना गया। आपने सन् 2009 में खयाल और ठुमरी के क्षेत्र में आल इंडिया रेडियो की भारतीय शास्त्रीय संगीत प्रतियोगिता में जीत हासिल की।

आप स्पिक मैके की सूचीबद्ध कलाकार हैं और आपने राजस्थान, उत्तराखण्ड़, उज्जैन और असम जैसे भारत के विभिन्न स्थानों में सरकारी स्कूल के बच्चों में संगीत की कार्यशाला प्रस्तुत की है।

आपने कोलकाता में बहुत ही प्रतिष्ठित 'सबरंग संगीत सम्मेलन' में प्रस्तुति दी है तथा दिल्ली में 'स्वाति थिरूमल महोत्सव दिल्ली' में प्रयोगात्मक संगीत कार्यक्रम 'राग' में प्रस्तुति दी है।

आप दुबई, संयुक्त अरब अमीरात, ताइवान और यू.एस.ए. जैसे देशों में प्रदर्शन कर चुकी हैं। आप दूरदर्शन और आल इंडिया रेडियो की एक नियमित कलाकार हैं।

रनिता डे ने दिए शास्त्रीय संगीत के टिप्स

शिकोहाबाद (ब्यूरो)। एसआरएस मैमोरियल पब्लिक स्कूल एवं नीलकंठ एकेडमी, चौ. दाताराम टाउन स्वामी नगर में शास्त्रीय स[illegible] की कार्यशाला आयोजित की गई। इसमें कसूर घराने की शास्त्रीय गायिका रनिता डे ने छात्र-छात्राओं को सात सुरों से परिचय कराया। ओम एवं गायत्री मंत्र को शास्त्रीय अंदाज में गाना सिखाया। विद्यालय प्रबंधन से कहा कि यदि संगीत शिक्षक बच्चों को लगातार शास्त्रीय संगीत की जानकारी देते रहे तो आगे चलकर यह बच्चे भी देश का नाम रोशन करेंगे। स्पिक मैके एवं शब्दम की ओर से मंजर उलवासी, दीपक औहरी, माया शर्मा उपस्थित रहे।

विद्यार्थियों को प्रशिक्षण देतीं शास्त्रीय संगीत गायिका रनिता-डे।

विद्यालयों में बही संगीत की बयार

शिकोहाबाद। साहित्य, संगीत कला को समर्पित संस्था शब्दम् एवं स्पीक मै[illegible] के संयुक्त तत्वावधान में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत गायिका रनिता डे द्वारा इन्[illegible] मैमोरियल सिरसागंज एवं लार्ड कृष्णा पब्लिक स्कूल में शास्त्रीय संगीत [illegible] प्रस्तुति एवं कार्यशाला आयोजित की गई। रनिता डे सोमवार से लगातार शा[illegible] संगीत की प्रस्तुति एवं कार्यशाला से विद्यार्थियों को निरन्तर रूबरू कराने क[illegible] कर रही हैं। उन्होंने विद्यार्थियों संगीत सुरों एवं उनकी बारीकियों के [illegible] परिचय कराया। विद्यालयों के प्रधानाचार्य ने सराहना करते हुए कहा कि [illegible] स्पीक मैके संस्था विद्यार्थियों को अपने शास्त्रीय संगीत [illegible] इन्दिरा मैमोरियल से राना मैडम एवं [illegible]

शिकोहाबाद में सोमवार को छात्रों को हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के टिप्स देती शास्त्रीय संगीत गायिका रनिता डे। • हिन्दुस्तान

रनिता डे ने दिए शास्त्रीय संगीत के टिप्स

शिकोहाबाद। शब्दम् ने युवा पीढ़ी को भारतीय सांस्कृतिक परम्परा से उसके मूल रूप में परिचित कराने के लिए स्पिक मैके ने कसूर घराने की अंतर्राष्ट्रीय स्तर की प्रख्यात हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत गायिका रनिता डे का कार्यक्रम आयोजित किया। इसमें एसआरएस मेमोरियल पब्लिक स्कूल एंव नीलकंठ एकेडमी चौधरी दाताराम टाउन स्वामी नगर में शास्त्रीय संगीत की प्रस्तुति एवं कार्यशाला आयोजित की। रनिता डे ने छात्रों को संगीत के सात सुरों के बारे में बताया। लयबद्ध तरीके से बच्चों को सात सुर सिखाए और ओउम एवं गायत्री मंत्र को शास्त्रीय अंदाज में गाना सिखाया।

सिरसागंज व शिकोहाबाद के विद्यालयों में बही संगीत की बयार

[illegible]

आमंत्रित कलाकार– नीलाक्षी खंडकर

कार्यक्रम– कथक नृत्य प्रदर्शन एवं कार्यशाला । दिनांक– 21 नवम्बर से 25 नवम्बर 2016

सीान– 1.श्रीमती शान्ति देवी लज्जाराम इण्टर कॉलेज, माड़ई। 2. डिवाइन इण्टरनेशनल एकेडमी, सिरसागंज। 3.सेण्ट रामास एकेडमी, स्वामी नगर। 4. सरस्वती विद्या मन्दिर, जसलई रोड, शिकोहाबाद। 5. चौ. अमर सिंह मार्ग श्री इंटर कॉलेज, बनवारा। 6. श्री मेगसिंह हुण्ड़ीलाल इण्टर कॉलेज, टीकामई। 7. स्वामी विवेकानन्द विद्यापीठ, माधौगंज। 8. आदर्श कृष्ण स्मारक इण्टर कॉलेज, अरांव। 9. हिन्द परिसर स्थित संस्कृति भवन शिकोहाबाद। 10.पं. ज्ञान सिंह क्षेत्रीय किसान इण्टर कॉलेज, उतरारा। 11.बीरवल सिंह दुलारी देवी इंटर कॉलेज, उतरारा।

कलाकार परिचय। नीलाक्षी खंडकर

नीलाक्षीजी ने कथक केन्द्र नई दिल्ली से तथा सांस्कृतिक मंत्रालय से नेशनल छात्रवृति प्राप्त की। आपने कथक में बहुत सारे अवार्ड जीते हैं तथा अनेक प्रतियोगिताओं में जज की भूमिका का निर्वाह किया है।

नीलाक्षीजी ने एकल तथा समूहगान के लिए सभी जगह भ्रमण किया है। आप 'इंडिया काउसिंल फॉर कल्चरर रिलेशन' की सदस्या हैं, जिसमें साउथ एशिया और जापान में कथक का प्रदर्शन आपने दिया है। आपने 'यूनिटी इन डाइवर्सिटी', युवा फैस्टीवल में एकल प्रस्तुति दी हैं।

आपने बहुत सारे प्रमुख महोत्सवों जैसे 'कथक महोत्सव', 'अनन्या महोत्सव', 'बसंत्तोसव' आदि में प्रसिद्ध गुरूओं एवं कोरियोग्राफरों जैसे पं. जयकिशन महाराज, पं0 कृष्णमोहन मिश्रा, श्रीमती गीतांजली लाल, पद्मश्री शोभना नारायण एवं पं. राजेन्द्र गंगानी जी के निर्देशन में अपनी प्रस्तुति दी है।

आपको राष्ट्रपति भवन में भी यू.एस.ए. के राष्ट्रपति बराक ओबामा तथा रूस के राष्ट्रपति के समक्ष प्रस्तुति देने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

नौनिहालों ने सीखे कथक के गुर

स्पिक मैके एवं शब्दम की ओर से आयोजित की गई कार्यशाला

नीलाक्षी खंडकर ने विद्यार्थियों को सिखाए कथक नृत्य के गुर

नीलाक्षी खंडकर ने स्टूडेंट्स को सिखाए कथक के गुर

कथक में झलका प्रकृति का

नीलाक्षी खंडकर ने बच

को दिए नृत्य के टिप्स

विद्यार्थियों का नाट्य मंचन, देशप्रेम के रंग में डूबे दर्शक

- **कार्यक्रम विषय** : देशप्रेम पर आधारित नाटक/नृत्य नाटिका कार्यक्रम
- **दिनांक** : 21 अगस्त 2016
- **प्रतिभागी विद्यालय** : पालीवाल पब्लिक स्कूल, यंग स्कालर्स एकेडमी, ज्ञानदीप पब्लिक स्कूल, मधु माहेश्वरी बालिका सरस्वती उ0मा0 विद्यालय, शिकोहाबाद।
- **स्थान** : हिन्द लैम्प्स परिसर, संस्कृति भवन

स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में देश प्रेम पर आधारित नाटक/नृत्य नाटिका का आयोजन शब्दम् संस्था ने किया। कार्यक्रम में पारदर्शिता बनाने के लिए प्रत्येक विद्यालय को एक स्वतंत्रता सैनानी के नाम से संबोधित किया गया। निर्णायक समिति से लेकर किसी भी दर्शक को यह पता नहीं था कि कौन सा दल किस विद्यालय से है।

कार्यक्रम में चार विद्यालयों के कुल 70 विद्यार्थियों ने भाग लिया, जिसमें ज्ञानदीप पब्लिक स्कूल ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

नाटय मंचन का दृश्य।

नाट्य मंचन के दौरान तिरंगा फहराते छात्रों की नाट्य टीम।

कार्यक्रम में जहां एक तरफ बच्चों ने देशप्रेम का संदेश दिया वहीं दूसरी तरफ भाईचारे को मजबूत करने के लिए कला के माध्यम से प्रेरित किया।

कार्यक्रम में निर्णायक समिति के रूप में मंज़र–उल वासै, अरविन्द तिवारी तथा एस. के. शर्मा दर्शक/श्रोताओं में वरिष्ठ सलाहकार रजनी यादव एवं अध्यापकगण आशीष, अरुण मिश्रा, सुचेता शर्मा, रेनु शर्मा, सुमन मिश्रा, रूबी यादव, साधना यादव, मोनिका शाक्य उपस्थित थे।

नाट्यमंचन टीम के साथ समूह छायांकन।

शील्ड एवं प्रमाण पत्र के साथ नाट्य मंच टीम।

कार्यक्रम में उपस्थित अध्यापकगण, गणमान्य एवं छात्र।

नाट्य मंचन का दृश्य।

विद्यार्थियों के देशभक्ति कार्यक्रमों के रंग में डूबे दर्शक

शब्दम् संस्था ने कराया देशप्रेम पर आधारित नाटकों का आयोजन

फिरोजाबाद(सक्त्र)। शब्दम् संस्था ने स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में देश प्रेम पर आधारित नाटक व नृत्य नाटिका का आयोजन किया। कार्यक्रम का प्रारम्भ शब्दम् अध्यक्ष के संदेश के माध्यम से हुआ, जिसमें कहा कि नाटक राष्ट्रप्रेम एकता सौहार्द को मजबूत करता है। विद्यालयों, महाविद्यालयों को इस प्राचीन विद्या को जीवन्त रखना ही होगा। कार्यक्रम में ज्ञानदीप, यंग स्कालर्स, मधु माहेश्वरी, पालीवाल पब्लिक स्कूल की नाट्य टीमों ने भाग लिया।

इस मौके पर पारदर्शिता बनाने के लिए प्रत्येक विद्यालय को एक स्वतंत्रता सेनानी के नाम से संबोधित किया गया। कार्यक्रम में जहां एक तरफ बच्चों ने देशप्रेम का संदेश दिया वहीं दूसरी तरफ भाई चारे को मजबूत करने के लिए कला के माध्यम से प्रेरित किया। अंततः निर्णायक समिति ने सभी टीमों को लगभग बराबर के अंक दिए पर ज्ञानदीप पब्लिक स्कू... कड़े मुकाबले में प्रथ... प्राप्त किया। कार्य... निर्णायक समिति के ... मंजूर-उल वासी, अ... तिवारी, एसके. शर्मा, ... सलाहकार रजनी य... आशीष, अरुण मि... सुचेता शर्मा, रेनु शर्मा, सु... मिश्रा, रूबी यादव, साधना यादव, मोनि... शाक्य, माया शर्मा, प्रभा सिंह, प्रीती औहर... मोहित जादौन मधुशाला...

फिजा में बिखरने लगे स्वतंत्रता दिवस के रंग

प्रतियोगिता में ज्ञान दीप स्कूल प्रथम

देशप्रेम आधारित कार्यक्रमों में दिखाई प्रतिभा

शिकोहाबाद (ब्यूरो)। शब्दम संस्था ने स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में देश प्रेम आधारित नाटक व नृत्य नाटिका प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। शुभारंभ शब्दम अध्यक्ष के संदेश से हुआ जिसमें उन्होंने विद्यार्थियों से कहा कि नाटक राष्ट्रप्रेम, एकता और सौहार्द को मजबूत करता है। विद्यालयों, महाविद्यालयों को इस प्रचीन विद्या को जीवंत रखना ही होगा।

ज्ञानदीप, यंग स्कालर्स, मधु माहेश्वरी, पालीवाल पब्लिक स्कूल की नाट्य टीमों ने भाग लिया। ... गया। कार्यक्रम में जहां एक ओर बच्चों ने देशप्रेम का संदेश दिया वहीं दूसरी ओर भाईचारे को मजबूत करने के लिए कला के माध्यमे से प्रेरित किया। निर्णायक समिति ने सभी टीमों को लगभग बराबर के अंक दिए। कड़े मुकाबले में ज्ञानदीप पब्लिक ... स्थान प्राप्त किया। ... तिवारी, एसके शर्मा, डा. रजनी यादव, आशीष, अरुण मिश्रा, सुचेता शर्मा आदि थे। संचालन ...

नृत्य नाटिका प्रस्तुत करतीं छात्र-छात्रायें।

विद्यार्थियों का नाट्य मंचन देख, देशप्रेम के रंग में डूबे दर्शक

“मानुस हों तो वही रसखान”

- **कार्यक्रम विषय** : 'रस महोत्सव'
- **दिनांक** : 24 जनवरी 2016 • **आमंत्रित कलाकार** : श्री मधुकर शर्मा एवं उनके साथी कलाकार श्रीमती शशिबाला एवं श्रीमती निकिता
- **स्थान** : गोकुल, वृंदावन • **संयोजन** : शब्दम्

''सेस गनेस महेस दिनेस, सुरेसहु जाहि निरंतर घ्यावैं।

जाहि अनादि अनंत अखण्ड, अछेद अभेद सुबेद बतावैं।।

नारद से सुक व्यास रटें, पचिहारे तऊ पुनि पार न पावैं।

ताहि अहीर की छोहरियाँ, छछिया भरि छाछ पै नाच नचावैं।।''

रसखान की जन्मस्थली गोकुल में 24 जनवरी को रस महोत्सव कार्यक्रम का आयोजन किया गया। रसखान समाधि स्थल पर गुनगुनी धूप के नीचे रसखान के पद जब श्री मधुकर शर्मा के कण्ठ से निकल रहे थे तो उपस्थित सभी श्रोतागण नाचने को विवश हुए जा रहे थे। कई बार तो ऐसा लगा कि स्वयं रसखान आज एक बार पुनः गोकुल नगरी में मधुकर शर्मा के कण्ठ से अपने पदों का गायन कर रहे हैं और सामने बैठे श्रोतागण उन पदों पर रास कर कृष्ण को रिझा रहे हैं।

कार्यक्रम का प्रारम्भ रसखान की समाधि पर इत्र लगाने से हुआ। इत्र लगाने के बाद रसखान की समाधि पर चादर चढ़ाकर पुष्प अर्पित किए गए। इसके बाद पद गायन के पूर्व चैतन्य गौड़ीय मठ के आचार्य का स्वागत हुआ। इस अवसर पर शब्दम् अध्यक्ष

रसखान समाधि पर पुष्पार्चन करते कलाकर एवं अन्य।

पद गायन पर थिरकते भक्तगण।

श्रीमती किरण बजाज ने अपने संदेश में कहा कि ऐसे सांस्कृतिक कार्यक्रमों के लिए अन्य संस्थाओं को भी आगे आना चाहिए। रसखान जैसे ब्रज भक्त कवियों को सुनना अपने आप में ब्रज संस्कृति भक्ति और साहित्य का संवर्धन है।

कार्यक्रम में रसखान के जीवन पर श्री मधुकर शर्मा ने पदों का गायन किया। उनके सहयोगी श्रीमती शशिबाला, कु. निकिता के साथ–साथ रसखान–भक्ति ओढ़े साधुगण भी उपस्थित थे।

रसखान समाधि पर समूह छायांकन।

कार्यक्रम में रसखान भक्ति का आनंद लेते श्रोतागण।

परिचय। श्री मधुकर शर्मा

श्री जे.एस.आर. मधुकर का जन्म 22 फरवरी 1971 में श्री वृंदावन धाम में हुआ। वृंदावन अपने आप में आध्यात्मिक दुनिया का यशस्वी गोलोक है। ऐतिहासिक रूप से वृंदावन धाम संगीत सम्राटश्री स्वामी हरिदास से सम्बद्ध है।

मधुकरजी ने अपनी प्रारम्भिक प्रशिक्षण की शुरूआत गुरू–शिष्य परम्परा के अनुसार की। उनका गुरुकुल नाम अपने आप में गुरु उनके पिता विराज रसिक संत हितश्री अश्वदरमा जी जो स्वामी हरिदास परम्परा और जयपुर घराने के कारण पड़ा। उन्होंने अपने आगे की शिक्षा पण्डित विद्याधर व्यास (ग्वालियर घराना), मुम्बई यूनिवर्सिटी, और पण्डित आसकरन शर्मा (मेवाती घराना) से प्राप्त की। उनकी आवाज़ अपने पिता की तरह गहरी, मधुर, गूँज पैदा करने वाली है तथा लोगों के दिलों को छूती है।

उनका गायन सर्वशक्तिमान भगवान श्री राधाकृश्ण को पूरे प्रेम और भक्ति के साथ समर्पित है। उन्होंने अपने बहुत सारे प्रदर्शन संगीत सम्मेलनों के द्वारा भारत–विदेशों और आकाशवाणी, दूरदर्शन अन्य धार्मिक चैनल जैसे–आस्था, संस्कार, सनातन, दिव्य दर्शन, न्यूज़–24, सोडम, सर्वधर्म संगम आदि पर दिये हैं।

उन्हें संगीत विशारद की उपाधि प्राप्त है। बहुत सारे कलाकार जैसे जगजीत सिंह, अनूप जलोटा, अनुराधा पोडवाल, सुरेश वाडकर, शंकर महादेवन, हरिहरन, सोनू निगम, सुनिधि चौहान, कविता कृष्णमूर्ति, पण्डित जसराज, पं. राजन साजन मिश्रा, गुंडेचा ब्रदर्स, अजय चक्रवर्ती आदि ने उनके संगीत निर्देशन में गाया है।

रस महोत्सव कार्यक्रम का आयोजन

फिरोजाबाद। शब्दम् संस्था द्वारा रसखान की जन्मस्थली गोकुल में रस महोत्सव कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का प्रारम्भ रसखान की समाधि पर इत्र लगाने से हुआ, इत्र लगाने के बाद रसखान की समाधि पर चादर चढ़ाकर पुष्प अर्पित किए गए। इसके बाद पद गायन के पूर्व चौतन्य गौढीय मठ के आचार्य का स्वागत हुआ। इस अवसर शब्दम् अध्यक्ष किरण बजाज ने अपने संदेश में कहा कि ऐसे सांस्कृतिक कार्यक्रमों के लिए अन्य संस्थाओं को भी आगे आना चाहिए। कार्यक्रम में शशिबाला, निकिता, रसखान भक्ति ओढ़े साधुगण, शब्दम् संस्था से पहुंचे। मंजर उल वासै, अशोक तोमर, हरिओम शर्मा, माया शर्मा, दीपक औहरी, दुर्ग सिंह, सोनू एवं लवली आदि उपस्थित थे।

पुस्तक चर्चा

- **कार्यक्रम विषय :** व्यंग्य उपन्यास ''हेड ऑफिस गिरगिट'' एक मूल्यांकन
- **दिनांक :** 5 फरवरी 2016, शुक्रवार ● **लेखक :** श्री अरविन्द तिवारी **मुख्य अतिथि :** श्री पुन्नी सिंह
- **मुख्य समीक्षक :** डॉ. रामसनेही लाल शर्मा 'यायावर', डॉ. चन्द्रवीर जैन, डॉ. महेश आलोक
- **स्थान :** हिन्द लैम्प्स परिसर, शिकोहाबाद ● **संयोजन :** शब्दम्

शब्दम् द्वारा 05 फरवरी 2016 को हिन्द परिसर स्थित संस्कृति भवन में पुस्तक चर्चा का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि हिन्दी के प्रसिद्ध उपन्यासकार एवं कहानीकार श्री पुन्नी सिंह थे तथा अध्यक्षता वरिष्ठ सलाहकार श्री उमाशंकर शर्मा ने की। प्रमुख समीक्षक के रूप में डॉ. रामसनेही लाल शर्मा 'यायावर', डॉ. महेश आलोक और डॉ. चन्द्रवीर जैन उपस्थित थे।

इस कार्यक्रम में श्री अरविन्द तिवारी के उपन्यास 'हेड ऑफिस के गिरगिट' जो अनेक पुरस्कारों से समादृत है पर चर्चा का आयोजन रखा गया। शब्दम् सलाहकार समिति के सदस्य एवं कार्यक्रम के संचालक श्री मंज़र –उल वासै ने मुख्य अतिथि का परिचय कराने के बाद व्यंग्य उपन्यास 'हेड ऑफिस के गिरगिट' के बारे में सामान्य जानकारी दी।

प्रमुख समीक्षक डॉ. महेश आलोक ने कहा 'हेड ऑफिस के गिरगिट' उपन्यास में हेड ऑफिस का वातावरण ही उपन्यास का नायक है। इस उपन्यास में आए अन्य चरित्र इसके नायक को महानायक बनाते हैं। डॉ. आलोक ने उपन्यास के अनेक उद्धरणों का जिक्र करते हुए इसकी कथावस्तु की कसावट और व्यंग्य पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने इसे श्रीलाल शुक्ल के रागदरबारी और ज्ञान चतुर्वेदी के बारामासी

मंचासीन अतिथिगण।

उपन्यास की परम्परा का उपन्यास बताते हुए हेड आफिस के गिरगिट की अनूठी व्यंजनाओं का जिक्र किया। शिक्षा विभाग के अधिकारियों और बाबुओं की कार्यप्रणाली का कच्चा चिट्ठा खोलते हुए इस उपन्यास का लेखक भारत भर के सरकारी दफ़्तरों का हाल बयां करता है।

डॉ. रामसनेही लाल शर्मा ने शोधपरक समीक्षा प्रस्तुत करते हुए कहा 'हेड ऑफिस के गिरगिट' रागदरबारी की परम्परा का एक बेहतरीन उपन्यास है। जैसे रागदरबारी की व्यंग्योक्तियां सूक्तियां बन गयी हैं उसी तरह 'हेड ऑफिस के गिरगिट' की अनेक व्यंग्योक्तियां हमारे सामने नई सूक्तियों के रूप में आती हैं। डॉ. शर्मा ने प्रगतिवाद का ज़िक्र करते हुए कहा कि प्रगतिवाद ने आम आदमी को साहित्य के केन्द्र में ला दिया है। आज भी आम आदमी के दुःख दर्द का चित्रण साहित्य में किया जा रहा है। 'हेड ऑफिस के गिरगिट' आम शिक्षक के शोषण की कहानी भी कहता है। यह उपन्यास ब्यूरोक्रेसी पर ऐसे व्यावहारिक व्यंग्य प्रस्तुत करता है, जिससे कि यह उपन्यास अनिवार्य रूप से पठनीय है।

समीक्षक डॉ. चन्द्रवीर जैन ने कहा कि व्यंग्य आम आदमी की बोलचाल में तबसे प्रयुक्त हो रहा है, जब वह साहित्य में भी नहीं आया था। डॉ. जैन ने उपन्यास में वर्णित भ्रष्टाचार और चारित्रिक कमजोरियों का जिक्र करते हुए कहा कि यह उपन्यास भारत के सभी सरकारी दफ़्तरों की वस्तुस्थिति का चित्रण करता है।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रख्यात कथाकार श्री पुन्नी सिंह ने कहा यह उपन्यास, उपन्यास विधा में नया प्रयोग है इसके लिए मैं लेखक को बधाई देता हूँ। श्री पुन्नी सिंह ने व्यंग्य उपन्यास की धारणा को खारिज करते हुए

डॉ. रामसनेही लाल शर्मा 'यायावर' अपनी समीक्षा प्रस्तुत करते हुए।

कहा 'रागदरबारी' भी उपन्यास में नया प्रयोग है। 'रागदरबारी' को व्यंग्य उपन्यास कहना , उपन्यास की गरिमा को कम करना है। श्री पुन्नी सिंह ने कहा हेड आफिस के गिरगिट में पात्रों की भीड है। पात्रों की भीड़ होते हुए भी यह उपन्यास सफल रहा इसका मतलब यह नहीं है कि लेखक के इस तरह के अन्य उपन्यास भी सफल रहेंगे। पुन्नी सिंह ने इस उपन्यास की भाषा को बेहतर बताते हुए कहा कि ऐसी भाषा मेरे पास भी नहीं है।

लेखक श्री अरविन्द तिवारी ने सभी समीक्षकों एवं सभागार में उपस्थित सहभागियों का आभार व्यक्त किया। श्री तिवारी ने इस उपन्यास की लेखन प्रक्रिया पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हेड आफिस में सम्पादक के रूप में कार्य करते हुए मैंने इस उपन्यास की रूपरेखा तैयार की थी। मैंने इस उपन्यास में लगभग 60 पृष्ठ सम्पादन के दौरान निकाल दिए जो इसकी कथा वस्तु को शिथिल कर रहे थे लेकिन व्यंग्य के रूप में सर्वश्रेष्ठ थे।

कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री उमाशंकर शर्मा ने श्री तिवारी को इस बात के लिए बधाई दी कि इस उपन्यास को लिखते समय उन्होंने इस बात का ध्यान रखा कि कहीं भी मर्यादा की सीमा का अतिक्रमण नहीं हो। व्यंग्य उपन्यासों में अक्सर मर्यादा की सीमाएं पार हो जाती हैं।

अन्त में कार्यक्रम का संचालन कर रहे श्री मंज़र–उल वासै ने शब्दम् की ओर से सभी उपस्थित सहभागियों एवं समीक्षकों का आभार व्यक्त किया एवं इस प्रकार के कार्यक्रमों की नींव रखने के लिए शब्दम् सलाहकारों को धन्यवाद दिया।

समूह छायांकन।

लेखक परिचय। श्री अरविन्द तिवारी

जन्म – 1 फरवरी, 1953 । गांव – नौनेर, मैनपुरी (उ.प्र.) । शिक्षा – एम.ए. (हिंदी), एम.एड.
देश की प्रतिष्ठित पत्र–पत्रिकाओं में रचनाएं प्रकाशित और चर्चित
प्रकाशित कृतियां – दिया तले अंधेरा, शेष अगले अंक में, हेड ऑफिस के गिरगिट (व्यंग्य उपन्यास), पंख वाले हिरण (उपन्यास), चुनाव टिकट और ब्रह्मा जी, दीवार पर लोकतंत्र, राजनीति में पेटीवाद, मानवीय मंत्रालय, नल से निकला साँप, मंत्री की बिंदी (व्यंग्य संग्रह), सब जानते हैं (कविता संग्रह) । स्तंभ लेखन – 'दैनिक नवज्योति', जयपुर में 1990–92 तक दैनिक व्यंग्य लेखन । संपादन – राजस्थान के शिक्षा विभाग की मासिक पत्रिका 'शिविरा' का संपादन (1996–99) सम्मान /पुरस्कार – श्रीनारायण चतुर्वेदी पुरस्कार (उ.प्र.) हिंदी संस्थान से दो बार), प्रेमचंद पुरस्कार (उ.प्र. हिंदी संस्थान), कन्हैयालाल सहल पुरस्कार (राजस्थान साहित्य अकादमी), सिद्धनाथ कुमार स्मृति सम्मान (झारखंड), आर्य स्मृति साहित्य सम्मान–2014 (किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली)
संप्रति– स्वतंत्र लेखन । संपर्क – मेहरा कॉलोनी, बस डिपो के पीछे, शिकोहाबाद, जनपद–फिरोजाबाद (उ.प्र.)–283135 । मोबाइल – 09457539172

सम्मान

उ0प्र0 हिन्दी संस्थान का व्यंग्य के लिए सर्वोच्च दो लाख रुपए का श्री नारायण चतुर्वेदी सम्मान अरविन्द तिवारी को प्रदान किया गया। समकालीन हिन्दी व्यंग्य में श्री अरविन्द तिवारी का महत्त्वपूर्ण स्थान है। उनके तीन व्यंग्य उपन्यास, छह व्यंग्य संकलन बेहद चर्चित रहे। उनकी काव्य कृति की दो पुस्तकों सहित कुल 12 पुस्तकें प्रकाशित हई हैं। उन्हें अब तक आठ राष्ट्रीय स्तर के सम्मान मिल चुके हैं।

शब्दम् के सलाहकार मण्ड़ल के वरिष्ठ सदस्य एवं प्रश्नमंच उपसमिति के अध्यक्ष मंज़र–उल वासै को अन्य कई सामान्य सम्मानों के अतिरिक्त दो विशिष्ट सम्मान/पुरस्कार प्रदान किये गये:

1. 'सरस्वती साधना परिषद' मैनपुरी उ0प्र0 द्वारा शिव दयाल वर्मा पुरस्कार (मैनपुरी में)
2. 'दिल्ली संस्कृत संस्थान' दिल्ली द्वारा श्रीमद्भागवत् गीता के अंग्रेज़ी हिन्दी और उर्दू भाषा के भाष्य में सक्रिय सहयोग के लिए विशिष्ट सम्मान (दिल्ली में)

शब्दम् इन पुरस्कार/सम्मानों के लिए उन्हें बधाई देता है।

'हेड ऑफिस के गिरगिट' उपन्यास का संक्षिप्त कथानक

अरविन्द तिवारी द्वारा लिखे गये व्यंग्य उपन्यास 'हेड ऑफिस के गिरगिट' की कथाभूमि राजस्थान के शिक्षा विभाग का आला दफ्तर है, जो बीकानेर में स्थित है। उपन्यास का 'नैरेटर' जो एक सीनियर सैकेण्ड्री स्कूल का प्राचार्य है, स्थानान्तरित होकर हेड ऑफिस का सैक्शन ऑफीसर बन जाता है। साथ ही सरकारी मासिक पत्रिका 'शिक्षा पत्रिका' का संपादक भी। नैरेटर की सूक्ष्म दृष्टि व्यंग्यात्मक शैली में भारतीय दफ्तरों का प्रतीक राजस्थान शिक्षा निदेशालय का एक्सरे करने लगती है।उपन्यास की शुरूआत विभागीय गैस्ट हाउस की सड़ाँध मारती अव्यवस्थाओं से होती है। हेड ऑफिस का परिसर और उसमें बने बैंक, डाकखाना, कैंटीन आदि का चित्रण बड़ी बारीकी से किया गया है। यद्यपि पूरी कथा उपन्यास के 'नैरेटर' की आँखों से बयां होती है परन्तु इस कथा का नायक प्रकाशन अनुभाग का ग्रुप ऑफीसर डॉ. प्रदीप है जो भ्रष्ट ब्यूरोक्रेसी के साथ कदमताल करता है। कार्यभार संभालते ही दफ्तर की भ्रष्ट व्यवस्था से साक्षात्कार करता हुआ 'नैरेटर' कह उठता है–भारत में भ्रष्टाचार और दफ्तर की धूल, दोनों का एक ही स्वभाव है, चाहे जितनी झाड़ू मारो अपनी जगह नहीं छोड़ते।

'हेड ऑफिस' शहर से सात कि.मी. दूर बियाबान में है जिसका पड़ोसी एक वेटरीनरी कॉलेज है। दफ्तर की लेट लतीफी का यह हाल है कि गर्मियों में कूलर की मांग करो तो वे लम्बी प्रक्रिया के बाद सार्दियों में मिल पाते हैं। दफ्तर के बाबू चूंकि घर दूर होने के कारण घर नहीं जा सकते, अतः वेटरनरी कॉलेज में काम है, कहकर छुट्टी मांगते हैं। एक दिन अचानक 'नैरेटर' को जब वेटरीनरी दफ्तर में कोई काम आ जाता है तो वह अपने अधीनस्थ बाबुओं से कहता है। बाबू कबूल करते हैं कि वे वेटरीनरी कॉलेज में किसी को नहीं जानते। वेटरीनरी कॉलेज उनके लिए छुट्टी मांगने का बहाना मात्र है ।

दफ्तर के बाबू का सोते हुए फोटो जब अखबार में छप जाता है, तो भी उसके खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं होती। सरकारी पत्रिका के प्रकाशन में धांधलियों का लेखा–जोखा भी इस उपन्यास में है। चाटुकारिता से सम्बन्धित अनेक घटनाओं को व्यंग्यात्मक शैली में चित्रित करते हुए नैरेटर कहता है ''एक वर्ष में मैंने सिर्फ यही सीखा कि सर!सर!यस!सर! वह मूलमंत्र है जिसे रटते हुए, बकते हुए कोई गधा भी हेड ऑफिस में सफलता पूर्वक नौकरी कर सकता है।

'कर्मचारी संघ' और 'शिक्षक संघ' से जुड़ी अनेक घटनाएँ यह साबित करती हैं कि सरकारी कर्मचारी कामचोरी के साथ–साथ ज़बरदस्त राजनीति भी करते हैं। फाइलों पर टिप्पणियाँ लापरवाही से लिखी जाती हैं। पत्रों को पढ़ा भी नहीं जाता। राष्ट्रीय स्तर की खेलकूद प्रतियोगिताओं हेतु जब हेड ऑफिस का एक अधिकारी राजाराम, राजस्थान की टीम लेकर बिहार के दानापुर पहुँचता है, तो पता चलता है कि टूरनामेंट की तारीखें एक माह बाद की हैं। उसने दिल्ली से आए पत्र की तारीख को इसी माह की तारीख मान लिया था। बाद में उसे सस्पैंड होना पड़ा। टिप्पणी लिखने में कितनी लापरवाही होती है, इसका नमूना आत्मदाह करने की घोषणा करने वाली शिक्षिका से सम्बन्धित फाइल है।

इस फाइल की टिप्पणी में कहा गया है कि शिक्षिका आत्मदाह करना चाह रही है, अतः इसे करने की व्यवस्था के लिए सामान्य प्रशासन अनुभाग को पत्र लिखा जाना चाहिए। जबकि टिप्पणी में 'आत्मदाह रोकने' की व्यवस्था हेतु पत्र लिखने की बात होनी

चाहिए थी। शिक्षा निदेशक जब प्रकाशन अनुभाग का निरीक्षण करने आते हैं तो सभी बाबू अपनी सीट छोड़कर उनका स्वागत करते हैं। शिक्षा निदेशक नाराज हो जाते हैं। उन्हें सिर्फ एक बाबू ही काम करता मिला।

प्रकाशन अनुभाग के ग्रुप ऑफीसर डा0 सतीश ब्यूरोक्रेसी की भ्रष्ट कार्य प्रणाली के जीते जागते नमूने हैं अतः वह अक्सर हास्य का पात्र बन जाते हैं।

प्रकाशन अनुभाग के स्टाफ ने उनका निक नेम 'जनाब ' रख दिया। यहाँ ज से जलील, ना से नालायक और ब से बदमाश अर्थ निकाला जाता है। डा. सतीश को हेड ऑफिस का सबसे बड़ा गिरगिट चित्रित किया गया है।

यही ग्रुप ऑफीसर जब डाइरेक्टर से बड़े अधिकारी शिक्षा विभाग के 'प्रंसिपल से कंट्री' की चाटुकारिता करने लगता है तो इमीडिएट बॉस, डाइरेक्टर साहब नाराज हो जाते हैं। किसी न किसी बहाने उन्हें भला बुरा कहते हैं यहाँ तक कि गालियाँ देने में भी गुरेज नहीं करते लेकिन यही डाइरेक्टर बाबुओं से मात खा जाता है। जैसलमेर के बाबू को धौलपुर का समझ कर उसके गृहजिले जैसलमेर में बतौर सजा स्थानांनतरित कर देता है। यह सब कर्मचारी संघों के कारण होता है। डाइरेक्टर जब बाबुओं से तंग आकर जयपुर अस्थाई दफ्तर में बैठने लगता है, तो हेड ऑफिस बीकानेर के बाबू उसकी 'गुमशुदा' की विज्ञाप्ति अखबारों में छपवाते हैं, यहाँ तक कि उसकी गुमशुदी की रिपोर्ट थाने में दर्ज कराने के लिए थाने का घिराव भी करते हैं।

कर्मचारी संघ के एक नेता भैयाजी एम.एल.ए. का ऐसा सबक सिखाते हैं कि एम. एल. ए. साहब की बोलती बंद हो जाती है। एम. एल. ए. साहब एक स्कूल की मान्यता के लिए वी.आई.पी. ट्रीटमेंट चाहते है, जो उन्हें नहीं मिलता।

निरंकुश आई.ए.एस. द्वारा शिक्षा विभाग के अधिकारियों को जब 'गधा' कहा जाता है तो सब चुपचाप सुनते रहते हैं लेकिन एक शिक्षा अधिकारी विद्रोह कर देता है।

भ्रष्टाचार की अनेक घटनाओं से गुंफित उपन्यास में कथावस्तु बेहद कसी हुई है। 'जनलेखा समिति'(Public Audit Committee) की बैठक से पूर्व शिक्षा विभाग में उन अधिकारियों को निलंबित कर दिया जाता है जिनका कोई दोष नहीं है, बल्कि जब घोटाला हुआ था तब से अधिकारी बने भी नहीं थे। जनलेखा समिति का अध्यक्ष विपक्ष का एम.एल.ए. होता है अतः उसके कोप से बचने के लिए निर्दोष अधिकारियों को बलि का बकरा बनाया गया। जनलेखा समिति की बैठक के बाद निलम्बित अधिकारियों को पुनः बहाल कर दिया गया। इस तरह की घटनाएँ पूरे देश के दफ्तरों में दिखाई देती हैं।

मार्च माह के अंतिम दो दिनों में चालीस हजार रुपयों का 'ब्ल्यू पॉटरी' का बड़ा सा घड़ा भ्रष्टाचार का चरम बिन्दु है। बाबुओं की चालाकियों षडयन्त्रों के कारण यह घड़ा खरीदा जाता है और मुख्यद्वार पर स्थापित कर दिया जाता है। पानी के लिए मिट्टी के घड़ों के नाम पर आया बजट इस तरह ठिकानें लगाया जाता है।

शिक्षामंत्री के इण्टरव्यू का सरकारी पत्रिका में छपना सेक्शन ऑफीसर और ग्रुप ऑफीसर के तबादले का कारण बनता है जबकि यह इण्टरव्यू शिक्षामंत्री की अनुमति से ही छापा गया था। ब्यूरोक्रेसी पर राजनीति की विजय के साथ ही उपन्यास का पटाक्षेप हो जाता है। अंत में शिक्षामंत्री सबसे बड़े गिरगिट साबित होते हैं।

कविता

बहुत कुछ रखना चाहता हूँ अपने प्रेम में
बहुत कुछ रखना चाहता हूँ अपने प्रेम में
नसों में बहने वाली किशोर लहर
बसन्त के फूलों जितनी उम्मीद
साँसों के तेज चलने से हवा में बनने वाली
अप्रत्यक्ष तस्वीर

साँसों की खुशबू से निकलती सारंगी की कोई नई धुन
नया राग जिसे अभी तक न गाया बजाया हो किसी ने
किसी मँगलग्रह पर भी नहीं

शतरंज जैसी चालों को प्रेम में रखना
गलत होगा इस समय

बहुत कुछ रखना चाहता हूँ अपने प्रेम में
सुबह का सूरज और उसके घर के दरवाजे
चन्द्रमा की नशीली आँखें

चिड़िया के पंखों के भीतर भरी हुई इच्छा
उड़ान वाली हवा और लक्ष्य तक पहुँचने की कला
पृथ्वी जितना धैर्य

और उसकी देह जितनी गरमी
कठिन समय में अंतरिक्ष
का ताला खोलने वाली चाभी

और समुद्र के दुख जितने आँसू
पृथ्वी की खुशी जितना जल
पीपल के पत्तों जैसी चंचलता
अपनी कमजोरियाँ और खूब पुराने
बरगद के पेड़ जितनी छाया

पुरखों का विश्वास और दादी के कदमों की आहट
रखना चाहता हूँ अपने प्रेम में

– श्री महेश आलोक

परिचय । श्री महेश आलोक

समकालीन हिंदी कविता के चर्चित युवा कवि एवं आलोचक। जवाहरलाल नेहरू विश्व–विद्यालय से एम0फिल0 एवं पीएच0डी0। हिंदी की सभी प्रमुख पत्र – पत्रिकाओं में कविताएं, समीक्षा, रपट आदि प्रकाशित। एक कविता संग्रह, तीन आलोचनात्मक कृतियां प्रकाशित। दूसरा कविता संग्रह प्रकाशनाधीन। उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा विश्वविद्यालय स्तरीय साहित्यकार सम्मान एवं शब्दम् द्वारा सर्वश्रेष्ठ शिक्षक सम्मान से सम्मानित। सम्प्रति–अध्यक्ष, हिंदी विभाग, नारायण पी0जी0 कॉलेज, शिकोहाबाद (फिरोजाबाद)।

गजानन माधव मुक्तिबोध का जन्म 13 नवम्बर सन् 1970 को हुआ था आप हिन्दी साहित्य की स्वातंत्र्योत्तर प्रगतिशील काव्य धारा के शीर्ष व्यक्तित्व थे। यह वर्ष आपका जन्म शताब्दी वर्ष है।

आपको स्मरण करते हुए आपकी एक चर्चित कविता का अंश।

मेरे जीवन की

मेरे जीवन की धर्म तुम्ही--
यद्यपि पालन में रही चूक
हे मर्म-स्पर्शिनी आत्मीये!

मैदान-धूप में--
अन्यमनस्का एक और
सिमटी छाया-सा उदासीन
रहता-सा दिखता हूँ यद्यपि खोया-खोया
निज में डूबा-सा भूला-सा
लेकिन मैं रहा घूमता भी
कर अपने अन्तर में धारण
प्रज्ज्वलित ज्ञान का विक्षोभी
व्यापक दिन आग बबूला-सा
मैं यद्यपि भूला-भूला सा
ज्यों बातचीत के शब्द-शोर में एक वाक्य
अनबोला-सा!
मेरे जीवन की तुम्ही धर्म
(मैं सच कह दूँ--
यद्यपि पालन में चूक रही)
नाराज न हो सम्पन्न करो
यह अग्नि-विधायक प्राण-कर्म
हे मर्म-स्पर्शिनी सहचारिणि!

– गजानन माधव मुक्तिबोध

मैं दुनिया की सभी भाषाओं की इज्जत
करता हूँ पर मेरे देश में हिंदी की इज्जत
करता हूँ पर मेरे देश में हिंदी की इज्जत
न हो, यह मैं सह नहीं सकता।

— आचार्य विनोबा भावे

जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य
का गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत
नहीं हो सकता।

— डॉ० राजेन्द्र प्रसाद